भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **जुलाई** 2008 | **अंक** 7

पुस्तकें हैं हमारी रहबर दोस्तों,
इनमें चिंतन हमारा गहन दोस्तों।
इनमें इतिहास, दर्शन, संवेदन छिपा,
मार्गदर्शन करातीं यही दोस्तों।
इनके पढ़ने से ज्ञान की खिड़कियाँ खुलीं,
ये मित्र भी हैं, गुरू, हमसफर दोस्तों।
इनमें जीते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी,
व्यास, वाल्मीकि, कालीदास, बाण दोस्तो।
इनमें शंकर, महावीर, बुद्ध, गुरुनानक,
रहते हजरत, ईशा, जरथ्रुस्ट्र दोस्तों।
ये पुस्तकें हैं वेद, रामायण, गीता-ज्ञान,
इनमें अध्यात्म, ज्योतिष, विज्ञान दोस्तों।
इनमें हाइटेक साइबर, अंबर है धरा
करले पुस्तकों से प्रेम, दोस्ती दोस्तों।

—डॉ० हरेराम पाठक
डिगबोई, असम

★★★

हैं किताबों से बड़ा इक राहबर कोई नहीं
चल सको तो इसके जैसा हमसफर कोई नहीं।
हर धमाका फेल है, बारूद का ऐ दोस्तों
इन किताबों से अधिक करता असर कोई नहीं।

— गिरीश पंकज

बनारस के दास

एक बार महाकवि जयशंकर प्रसाद और प्रसिद्ध पत्रकार-लेखक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी आपस में कुछ चुहल कर रहे थे। चतुर्वेदीजी ने बनारसवासियों पर व्यंग्य करते हुए कहा—''बनारस पिछड़ा शहर है और यहाँ के रहनेवाले भी काफी पिछड़े हैं।''

प्रसादजी ने फौरन उत्तर दिया—''चाहे कुछ हो, कुछ दिन पहले तक तो बनारस का इतना दबदबा था कि लोग अपने पुत्र का नाम भी 'बनारसीदास' रखने में गर्व महसूस करते थे।''

उस समय चतुर्वेदीजी की शक्ल देखने लायक थी।

—'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' से

आर्थिक-यंत्रणा के ताप से झुलसती

गर्मी की छुट्टियाँ बीत चली हैं। बच्चों के स्कूल खुल चुके हैं या खुलने वाले हैं। बाज़ार में स्टेशनरी और कॉपी-किताब की आवक शुरू हो चुकी है। बच्चों की ज़रूरत की ये चीज़ें भी महँगाई की मार से नहीं बची हैं। पेट्रो-पदार्थों की मूल्यवृद्धि का असर यहाँ भी देखा जा सकता है। पुस्तकों के प्रकाशन, प्रेस, कम्पोज़िंग, छपाई, ढुलाई आदि सारी प्रक्रिया पर इस तरह की मूल्यवृद्धि का सीधा असर पड़ता है और कागज़, कॉपी, पुस्तक जैसी ज़रूरी चीज़ें महँगी होने लगती हैं। इन महँगी चीज़ों के समानान्तर निश्चित शिक्षा-शुल्क और स्कूल की दूसरी ज़रूरतें पूरी करने की जद्दोजहद में हमारे देश का समूचा मध्यवर्ग इस विकास-यात्रा की दौड़ में घिसटने को मजबूर है और तमाम सरकारी, प्रयत्नों और दावों के बावजूद किसान-मज़दूर एवं अन्य पिछड़ेजन इस विकास-पथ पर रेंगते दिखलायी दे रहे हैं। साक्षरता से आगे बढ़कर समग्र शैक्षणिक विकास ही यह प्रक्रिया इस महँगाई के सामने कुंठित होती नज़र आ रही है।

महँगाई के इस भयावह संकट के समानान्तर राष्ट्रीय प्रकाशन-उद्योग पर भी खतरा मँडराने लगा है। उन्मुक्त बाजार-व्यवस्था के तहत मीडिया के साथ-साथ प्रकाशन क्षेत्र में भी शत-प्रतिशत विदेशी-निवेश को मंजूरी दे दी गयी है। अभी तक राष्ट्रीय स्तर पर जहाँ लेखन और प्रकाशन में मूल्य, मानक और गुणवत्ता को तरजीह मिलती रही है, वहीं अब गलाकाट बाज़ारू प्रतिस्पर्धा, मूल्यहीनता और ग्लैमर की दौड़ में शामिल होकर हम शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के कौन से नये प्रतिमान स्थापित करने जा रहे हैं, इसका आकलन पारिस्थितिक संघर्ष के बीच ही सम्भव हो सकेगा। उन्मुक्त बाज़ार की व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता के बीच टी-आर-पी रेट बढ़ाने के लिये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिंसक और अश्लील उपयोग कहाँ तक सही है, यह विचारणीय है। वस्तुत: इस स्वतंत्रता के साथ जिस दायित्वबोध की अपेक्षा की जाती है, वह इस मीडिया में नहीं है। अत: समय की माँग है कि संवैधानिक तौर पर ऐसे दिशा-निर्देश जारी हों जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को परिभाषित करते हुए सांस्कृतिक दायित्व की प्रतिबद्धता निश्चित करें।

सर्वेक्षण

आज वैश्वीकरण की अंध-स्पर्धा में हमारी सारी समस्याएँ वैश्वक हो चली हैं। महँगाई वैश्वक है, भूख वैश्वक है, शिक्षा और स्वास्थ्य वैश्वक है, प्रसार-माध्यमों का बाज़ारूपन वैश्वक है, अर्थात् हमारी सारी समस्याएँ वैश्वक हैं। किन्तु हमारी चिन्ता वैश्वक नहीं है। राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान कभी वैश्वक नहीं होता। इनके निदान और समाधान के लिये हमें आत्म-निरीक्षण करना होता है, स्वयं समाधान खोजना होता है, तभी हम गतिशील हो पाते हैं और वैश्वक-प्रगति में शामिल होने की अर्हता प्राप्त करते हैं। किन्तु आत्म-निरीक्षण की इस कठिन-प्रक्रिया का सामना करने की दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। यूनीसेफ की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक भारत में कुपोषण और भुखमरी 33 प्रतिशत है। यह स्थिति तब है जबकि भारत विश्व में सबसे बड़ा कृषि प्रधान देश है। यहाँ प्रश्न उठता है कि फिर क्यों भारत का किसान आत्महत्या करने को मजबूर है? प्रौढ़

(*शेष पृष्ठ 4 पर*)

अगली सदी का शोधपत्र

— सूर्यबाला

एक समय की बात है, हिन्दुस्तान में एक भाषा हुआ करे थी। उसका नाम था हिन्दी। हिन्दुस्तान के लोग उस भाषा को दिलोजान से प्यार करते थे। बहुत सँभालकर रखते थे। कभी भूलकर भी उसका इस्तेमाल बोलचाल या लिखने-पढ़ने में नहीं करते थे। सिर्फ कुछ विशेष अवसरों पर ही वह लिखी-पढ़ी या बोली जाती थी। यहाँ तक कि साल में एक दिन, हफ्ता या पखवारा तय कर दिया जाता था। अपनी-अपनी फुरसत के हिसाब से और सबको ख़बर कर दी जाती थी कि इस दिन इतने बजकर इतने मिनट पर हिन्दी पढ़ी-बोली और सुनी-समझी (?) जाएगी। निश्चित दिन, निश्चित समय पर बड़े सम्मान से हिन्दी झाड़-पोंछकर तहखाने से निकाली जाती थी और सबको बोलकर सुनाई जाती थी।

ये दिन पूरे हिन्दुस्तान में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते थे। बच्चों से लेकर विशिष्ट अतिथि और आयोजनों के अध्यक्ष तक इस भाषा में बोली जानेवाली कविता, निबन्ध अथवा भाषणों का रट्टा मारा करते थे। चूँकि उस दिन रिवाज के मुताबिक आना-जाना, उठना-बैठाना तथा हार पहनाना आदि सब कुछ हिन्दी में होता था, अत: अनुवाद की निरंकुश अफरा-तफरी और बेचैनी मच जाती थी। अनुवादकों की बन आती थी। पलक झपकते शब्द-के-शब्द, वाक्य-के-वाक्य दल-बदल लेकर कायापलट तक कर जाया करते थे। देखते-देखते 'प्रपोजल' 'प्रस्ताव' में, 'रिक्वेस्ट' 'प्रार्थना' में, 'प्लीज' 'कृपया करके' में, 'थैंक्स' 'धन्यवाद' में और 'स्पीच' 'भाषण' में बदल जाते थे।

देखते-देखते परम्परा, संस्कृति, भाषा, संस्कार, समृद्ध साहित्य, आदर्श, राष्ट्रीयता, कटिबद्ध, एकसूत्रता आदि शब्दों का ट्रैफिक जाम हो जाया करता था। इनाम पर इनाम, तमगे पर तमगे बाँटे जाते थे। इस एक दिन हिन्दी लाभ और मुनाफे की भाषा हो जाया करती थी। इसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व छूट और 'भव्य सेल' की चकाचौंध से जगमगा उठता था। लेकिन यह छूट सिर्फ इन्हीं दिनों के लिए थी। बाकी दिनों बात बिना बात हिन्दी बोलने, इसे खर्च करने के जुर्म की सजा हर बेरोजगार, दकियानूसी और पिछड़े आदमी को भुगतनी पड़ती थी।

चूँकि यह भाषा समूचे हिन्दुस्तान की गरिमा की प्रतीक थी, इसलिए इसे वातानुकूलित ऑफिसों की एयरटाइट फाइलों में बन्द करके रखा जाता था। सरकार की तरफ से इसकी सुरक्षा के कड़े निर्देश थे। जेड क्लास सुरक्षा चक्रों के बीच, संसद की बैठकों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि 'माननीय सभासदो! माननीय अध्यक्षजी!' के अतिरिक्त सब कुछ अंग्रेजी में हो। इसलिए कुछेक सिरफिरों को छोड़कर सारे प्रस्ताव अंग्रेजी में ही प्रस्तावित और ख़ारिज किए जाते थे। सारी-की-सारी योजनाएँ और बड़े-से-बड़े स्केंडल अंग्रेजी में ही किए जाते थे; जैसे बोफोर्स। सिर्फ कुछ विशेष प्रकार के स्केंडल हिन्दी में होते थे, जैसे प्रतिभूति घोटाला। कम अंग्रेजी बोलते थे, जो हिन्दीभाषी (पैदाइशी) थे, वे ज्यादा। क्योंकि उन्हें अपने पद की गोपनीयता की तरह ही अपनी भाषा की, गोपनीयता बनाए रखने की चिन्ता सर्वोपरि थी।

उस सदी में पूरे देश में गणतंत्र लागू होने पर भी तथा सभी सम्भव प्रकार के घोटालों की पूरी छूट होते हुए भी हिन्दी के मामले में सरकार के स्पष्ट अनुशासित और कड़े निर्देश थे कि खबरदार! हिन्दी को कोई छूने न पाए। यह सम्पूर्ण राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। अत: साक्षात्कारों तथा स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के अध्ययन तक हिन्दी के जरिए जो पहुँचने की कोशिश करेगा उसका प्रमोशन, परीक्षाफल, फाइल, आवेदन, अनुरोध, प्रार्थना तथा सारे अटके पड़े काम हमेशा के लिए अटके रह जाएँगे। वह लोगों द्वारा हेय दृष्टि से देखा जानेवाला उपेक्षा का पात्र होगा।

उस सदी में कुछ बड़े-बड़े लोगों के लिए ही हिन्दी बोलने का कोटा निर्धारित किया जाता था। कोई बड़ा लेखक, राजनीतिज्ञ, अफसर या अहिन्दीभाषी जब हिन्दी बोलता तो तालियाँ पिट जाती थीं, लोग 'साधु-साधु' कह उठते थे; लेकिन वही हिन्दी जब कोई सामान्य व्यक्ति बोलता तो वह उपहास, दया या उपेक्षा का पात्र समझा जाता था। इसलिए प्राय: ऐसे लोग अपने देश में अंग्रेजी और विदेशों में जाकर हिन्दी बोल आया करते थे।

स्कूलों में भी इस भाषा पर कोई आँच न आने पाए, इसका पूरा ध्यान रखा जाता था और हिन्दी की सारी पढ़ाई अंग्रेजी के माध्यम से करा दी जाती थी। आज की बात और है। आज तो हिन्दी भाषा का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। हिन्दी है ही नहीं। हिन्दी, इतिहास की, अतीत की भाषा हो चुकी है; लेकिन पिछली सदी में जब वर्तमान की भाषा थी तब भी सरकार और शिक्षाविदों ने ऐसी तकनीक ईजाद कर ली थी कि बगैर हिन्दी का एक शब्द भी ख़र्च किए हिन्दी पढ़ा-लिखा दी जाती थी। उन दिनों माताओं के लिए सबसे ज्यादा गर्व की बात यही हुआ करती थी कि उनका बच्चा सिर्फ हिन्दी में फेल हो गया। गोया हिन्दी में फेल होना अन्य विषयों में पास होने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण था।

हमारी नवीनतम शोधें बताती हैं कि कुछ ग़लत दस्तावेज़ों और पुस्तकों के आधार पर हम हिन्दी को बीसवीं शताब्दी के हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा या मातृभाषा जैसा कुछ मान बैठते हैं। पर हकीकत तो यह है कि वह इनमें से कुछ भी नहीं हैं। ये सारे तथ्य भ्रामक हैं। शोध बताती है कि दरअसल हिन्दी भाषा थी ही नहीं। वह खास-खास अवसरों पर पहनी जानेवाली पोशाक थी, लगाया जानेवाला मुखौटा थी। वह एक डफली थी, जिस पर लोग अपने-अपने राग गाया करते थे। वह चश्मा थी, जिसे लगाकर अनुदानों, पुरस्कारों की छाया में सांस्कृतिक यात्राओं का सुख लूटा जा सकता था। वह एक सीढ़ी थी, जिसके सहारे आदमियों के मंच तक चढ़ा जा सकता था और करेंसी नोट थी, जिसे विशिष्ट आयोजनों पर सार्त्र, मार्क्स, ऑस्कर वाइल्टानस्टॉप, चेख़व और कामू के माध्यम से भुनाया जा सकता था। अपने देश की पिछली और अगली शताब्दियों के ग़रीब कवि-लेखकों में इसे भुनाने की औकात नहीं थी। ग्लानि और लज्जावश कबीर, सूर, तुलसी, रत्नाकर, भारतेन्दु, महादेवी वर्मा, प्रसाद और निराला तक नेपथ्य में छुप जाया करते थे, राजमार्गों से हट जाया करते थे।

दिक्कत सिर्फ़ एक थी, हरेक के अपने चश्मे थे—और चश्मा जिस रंग को सही बताता था, दूसरा उसे पूरी तरह ख़ारिज कर देता था।

डफलियाँ भी सबकी अलग-अलग, जिस पर अपने राग गाते तो भी ठीक था, लेकिन बाद के दिनों में सिर्फ डुगडुगी पीटने लगे और इसी फेरफार में हिन्दी की डुगडुगी पिट गई और वह पूरी तरह इतिहास की भाषा हो गई। अपने देश के लोगों द्वारा अपने देश की मिट्टी में विलीन हो गई।

दु:ख है कि पिछली सदी की इस भाषा का कोई अवशेष नहीं रहा। इसलिए शोध छात्रों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उनकी सुविधा के लिए सूचना दी जाती है कि वे चाहें तो विदेशों के कुछ विश्वविद्यालयों से हिन्दी से सम्बन्धित कुछ सामग्री और सूचनाएँ उपलब्ध कर सकते हैं।

भगवान् हताश ध्वनित हुए। अपनी स्थिति पर क्षोभ प्रकट करते हुए बोले, ''आप ही सोचिए, कलश का पत्तर उखड़ा होने से मन्दिर की और मेरी भी इमेज बिगड़ती है या नहीं? साख भी गिरती ही है। भक्तों को क्या दोष दें, सोचेंगे ही कि जब इस मन्दिर का भगवान् अपना ही टूटा छत्तर नहीं दुरुस्त करवा पा रहा है तो हमारे उधड़े छप्पर क्या छवाएगा! हमारी बिगड़ी क्या बनाएगा!''

सूर्यबाला के व्यंग्य-संग्रह
'भगवान ने कहा था' से

साहित्य में बाजारवाद

— अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव

नये सन्दर्भों में एक नया प्रश्न बहुत तेजी से उभर रहा है जो पहले प्रश्न से भी अधिक जटिल है किन्तु उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। जीवन के दूसरे क्षेत्रों पर बाजारवाद का पहले ही कब्जा हो चुका है और अब उसने चुपके-चुपके साहित्य सृजन के क्षेत्र पर भी अपना आधिपत्य जमा लिया है। भौतिकवाद की आँधी से उठी क्रान्ति की लहर ने प्रकाशकों को ही नहीं, लेखकों और समीक्षकों की दृष्टि भी बदल दी है। आमतौर पर कहा जाता है कि मुद्रणकला के विकास ने साहित्य को समृद्ध करने में ऐतिहासिक योग दिया है, जबकि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। आज से डेढ़-दो-सौ वर्ष पहले प्रतिभा-विहीन व्यक्ति, कवि या लेखकों की जमात में शामिल होने की बात सोच भी नहीं सकता था और यदि किसी ने कवि होने के भ्रम में किसी कृति की रचना भी की तो पाठकों ने पहली ही नजर में उसे खोटे सिक्के की तरह नकार दिया। ऐसी सैकड़ों पुस्तकें नष्ट हो चुकीं और जो किसी तरह बची रहीं, वे किसी संग्रहालय में ममी की तरह रखी हुई हैं। मुद्रण कला के विकास ने अब हर किसी को अपनी पुस्तक छपाने की सहज सुविधा उपलब्ध करा दी, जिसके कारण प्राय: हर रोज सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, जिनका मूल्य किसी न किसी अंश में पाठकों को चुकाना पड़ता है। ऐसे अनेक कारण हैं जिनके आधार पर यह बेहिचक कहा जा सकता है कि कतिपय प्रकाशक जो येन-केन प्रकारेण धन अर्जित करने के लिए इस व्यवसाय में हैं, वे लेखकों का शोषण करने के साथ पाठकों का भी शोषण कर रहे हैं। पुस्तक का प्रकाशन और विक्रय व्यवसाय होता है किन्तु लेखन को किसी भी दृष्टि से व्यवसाय या धन अर्जित करने का जरिया मानना रचनाधर्मिता की अवमानना है। अरस्तू और भरत मुनि से लेकर पूर्व या पश्चिम के किसी भी चिन्तक ने लेखन को व्यवसाय नहीं माना। आचार्य मम्मट के 'अर्थकृते' का आशय भी आजकल की तरह रायल्टी या पारिश्रमिक के रूप में रुपया कमाना नहीं रहा है। यह मार्क्सवादी दर्शन की देन है कि प्रत्येक कर्म को, वह किसी भी नीयत या उद्देश्य से किया जाय, श्रम से जोड़ दिया जाता है। इस दर्शन में लेखक की भावयित्री प्रतिभा को तो स्वीकार किया ही नहीं जाता, उसकी कारयित्री प्रतिभा को भी श्रम कौशल मान लिया जाता है। रचनाकार की कारयित्री प्रतिभा और सड़क पर गिट्टी तोड़ने वाले श्रमिक के कौशल में कोई अन्तर नहीं माना जाता। अच्छे-बुरे, सकाम-निष्काम, स्वार्थ और परार्थ सभी कर्मों का मूल्य पैसे में आँकने की मानसिकता ने ही मार्क्स को धर्म को भी व्यवसाय मानने के लिये प्रेरित किया था।

मार्क्स ने जिस संस्कृति को जन्म दिया है उसमें केवल शारीरिक श्रम का ही नहीं चिन्तन, मनन, बुद्धि और समय का मूल्य भी पैसे में आँका जाता है। लेखन या रचना-धर्मिता को भी इस संस्कृति ने अपनी चपेट में ले लिया है। साहित्य सृजन व्यवसाय बन गया है और प्रकाशक की भूमिका एक ऐसे फैक्टरी मालिक की बन गई है जो मजदूरों को मजदूरी का भुगतान कर माल का उत्पादन करता है। शोषण भी मार्क्सवादी दर्शन का ही शब्द है। इस संस्कृति के बीज साहित्य के क्षेत्र में कला, कला के लिये या कला जीवन के लिये विषय पर बहस के रूप में पिछली सदी के प्रारम्भिक दशकों में बोये गये थे जो अब वटवृक्ष की तरह चारों ओर जड़ जमा कर विशाल आल-बाल की शक्ल में बदल गये हैं। आज न तो कोई तुलसी की तरह 'स्वान्त:सुखाय रघुनाथगाथा' लिखने के लिये तैयार है और न भवभूति की भाँति भविष्य में कृति का मूल्यांकन करनेवालों की आशा में निश्चिन्त होकर बैठ जाने को तैयार है। उसकी रचनाधर्मी की भूमिका खत्म हो चुकी है और वह लेखकीय कौशल की पूँजी के बल पर, दूकानदार बन कर, पाठकों को उपभोक्ता मान कर, साहित्य के बाजार में बैठ गया है।

नई संस्कृति में लेखन का उद्देश्य बदल गया है और लेखकीय प्रतिभा के मानदण्ड भी बदल गये हैं। जिस प्रकार अमृत की प्राप्ति के लिये भेष बदलकर देवताओं की पंक्ति में बैठे राहु को देवता भी नहीं पहचान सके थे, उसी प्रकार आज पाठकों के लिये असली और नकली लेखकों की पहचान कठिन हो गई है। यह समस्या उन लोगों ने पैदा की है जो अपनी गाँठ का रुपया खर्च कर अथवा प्रभुता या किसी अन्य जुगाड़ से ऐसी पुस्तकें छपा लेते हैं जो सृजन की किसी कोटि में नहीं आती और उन्हें साहित्य के क्षेत्र में फैलती या फैलाती 'प्रदूषण' कहने में कोई हर्ज नहीं होगा। आजकल एक ओर केवल रुपया के लिये लिखने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है और दूसरी ओर ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है जो अपना रुपया खर्च करके लेखकों की पंक्ति में बैठने के लिये छटपटाते रहते हैं। ऐसी ढेरों कविता पुस्तकें प्रकाशित हो रही है, जिनसे छायावादी युग की वे कवितायें ही हजार गुना अच्छी थीं जिन्हें एकान्त में गुनगुनाने से ही लोगों को कुछ क्षण के लिये ही सही, आनन्द की अनुभूति होती थी। ईमानदार असली टिकाऊ लेखन की कमी आज हर पाठक को खलने लगी है, जबकि नकली लेखकों की मुलम्मा चढ़ी पुस्तकों से बाजार पटा रहता है।

व्यवसाय की दृष्टि से हटकर पिछली सदी के चौथे दशक के आस-पास ही विदेशी भाषा और साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में भी ऐसी पुस्तकें लिखी गई और प्रकाशित हुई जो पाठकों को आकृष्ट तो अवश्य करती रहीं किन्तु नैतिकता, सांस्कारिकता की दृष्टि से उनका कभी स्वागत नहीं किया गया। ऐसी पुस्तकों के लेखन की प्रेरणा अंग्रेजी और उर्दू के उन लेखकों से मिली थी, जो शराबखोरी और यौन सम्बन्धों के धरातल पर ही अपनी कहानियाँ और उपन्यास लिखते रहे तथा जिसे यथार्थवादी लेखन कहा जाता रहा।

लेखन और प्रकाशन को व्यवसाय बनते ही सृजन के सम्पूर्ण क्षेत्र पर बाजारवाद ने कब्जा कर लिया और इसी के साथ समीक्षकों ने भी बिचौलिया दलाल की भूमिका अख्तियार कर ली। आजकल किसी भी पुस्तक की समीक्षा लिखी नहीं जाती, लिखाई जाती है। ऐसी समीक्षाएँ ऐकान्तिक रूप से लेखक और समीक्षक के सम्बन्धों पर आधारित होती है, जिसमें या तो समीक्ष्य कृति को वर्ल्ड-क्लासिक सिद्ध किया जाता है या उसे पूरी तरह घटिया मानकर खारिज कर दिया जाता है। कला या समीक्षा के कोई मानदण्ड नहीं हैं। जब 'कला के लिए' या 'कला जीवन के लिए' मुद्दे पर बहस छिड़ी थी, तभी कविता और सृजन की अन्य विधाओं को उपयोगितावाद अर्थात् व्यवसाय से जोड़ने की शुरुआत हो चुकी थी। मार्क्सवादी समीक्षा के सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित हैं कि मनुष्य के जीवन में आर्थिक प्रेरणा ही मुख्य है और इसी के प्रभाव से कला तथा मानव-संस्कृति का विकास होता है। इस नीति से विकसित समाज के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करने वाला साहित्य ही उच्च कोटि का होता है। इससे पहले यूनानी आलोचक लांजायनस ने कहा था कि अर्थ के प्रति आकर्षण अच्छे साहित्य की सर्जना में सबसे बड़ा अवरोध होता है। दूसरे समीक्षक भी इससे सहमत रहे किन्तु मार्क्सवादियों ने अर्थप्रधान राजनीति के बल पर सभी मानदण्डों को एक ही झटके में तोड़कर फेंक दिया। कदाचित् यह भी मार्क्सवादी 'थ्योरी-ऑफ-इवोल्यूशन' का नतीजा है कि कुछ समय पहले तक मार्क्सवादी समीक्षा का जो रूप था वह भी अब बदलने लगा है और लेखक, समीक्षक के परस्पर सम्बन्ध तथा राजनीतिक आस्थाएँ ही समीक्षा का प्रमुख मानदण्ड बनते जा रहे हैं। लेखक और समीक्षक के सम्बन्ध बहुत कुछ अंशों में ठीक वैसे ही बनते जा रहे हैं जैसे औद्योगिक प्रतिष्ठान और विज्ञापन एजेन्सियों में होते हैं।

साहित्य के क्षेत्र पर बाजारवाद का कब्जा होने से लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के सामने अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। लेखक परेशान है कि उसके सृजन का समुचित समादर नहीं हो रहा, प्रकाशक परेशान है कि पुस्तक खरीदने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है

और पाठक परेशान है कि उसे नयी समीक्षा-शैली और विज्ञापन-कला के जाल में उलझ कर निहायत ही घटिया पुस्तकें खरीदनी पड़ती है। इस बात को सभी वर्ग स्वीकार करते हैं कि पुस्तकों के प्रति पाठकों का रुझान कम होता जा रहा है, किन्तु इसके लिये कभी दूरसंचार संस्कृति को दोषी ठहराया जाता है, कभी सूचना-प्रौद्योगिकी के विस्तार को जिम्मेदार माना जाता है या कभी कोई दूसरा कारण बतला दिया जाता है। इस बात की ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा कि साहित्य में बाजारवाद के पनपते ही 'लेखकों, समीक्षकों और प्रकाशकों' के प्रति पाठकों का विश्वास उठता जा रहा है।

प्रेरणादायी किताबें

प्रेम की धारा बहाती सब किताबें।
संगिनी-साथी कहाती सब किताबें।
घोर तम कर दूर सारी जिन्दगी का,
पथ समुज्ज्वल कर दिखाती सब किताबें।

सर्वदा साथी किताबों को बनाएँ।
व्यर्थ की उद्विग्नता को भी भगाएँ।
हर्षमय जीवन, सफर भी हो सुहाना,
मौज-मस्ती में जियें, नव-गीत गाएँ।

—हीराप्रसाद 'हरेन्द्र'
सुलतानगंज (भागलपुर), बिहार

(पृष्ठ 1 का शेष)

शिक्षा कार्यक्रम चला कर हमारी सरकारें निरक्षर को साक्षर बनाने में लगी हैं, फिर क्यों प्राथमिक विद्यालयों का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है? पैसा कमाने की होड़ में हम अपनी भाषा, संस्कृति, धर्म दर्शन, अध्यात्म सब कुछ दाँव पर लगा चुके हैं, फिर क्यों हमारे प्रसार-माध्यम, अप-संस्कृति या विकृति का प्रचार करने को विवश हैं? अपनी ही ज़मीन से उठने वाले सारे सवाल हमारे अपने हैं, वैश्वक नहीं। अत: इन प्रश्नों का उत्तर हमें खोजना है। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये हमें वैश्वक-प्रत्यय छोड़कर तथाकथित विश्व-बाज़ार की चकाचौंध से जूझना होगा। राष्ट्रकवि दिनकर के शब्दों में—

हटो, व्योम के मेघ पंथ से
स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
दूध-दूध—ओ वत्स!
तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं!

—परागकुमार मोदी

शिक्षा और संभावना : पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में

मनुष्य ने जब से ज्ञान और चिन्तन को लिपिबद्ध करके उसे पुस्तक के रूप में सहेजना शुरू किया था, तब से ही पुस्तकों और पुस्तकालयों का महत्त्व कायम है। विश्व की सभी सभ्यताओं में पुस्तकें और पुस्तकालय समादृत हैं। वस्तुत: पुस्तकालय ऐसा स्थान है जहाँ आज के दौर में ज्ञान के साथ-साथ अपेक्षित सूचनाएँ और मनोरंजन के साधन भी उपलब्ध हो जाते हैं। अध्ययन और अनुसन्धान की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण पुस्तकालयों का प्रारूप भी बहुत-कुछ बदल चुका है और इसी परिदृश्य में 'पुस्तकालयाध्यक्ष' अथवा 'लाइब्रेरियन' की भूमिका में भी गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। वैसे भी पुस्तकों की सुरक्षा, संरक्षा और भंडारण इस पेशे का प्रमुख कार्य है, इसके साथ ही अध्येताओं को आवश्यक-पुस्तकें, सामग्री उपलब्ध कराना और पुरानी, अप्रयुक्त पुस्तकों से सन्दर्भ एवं सूचनाएँ एकत्र करने में सहयोग देना भी इसी काम के अन्तर्गत आता है। तेजी से विकास करते इस विज्ञान-तकनीक प्रधान युग में पुस्तकालयाध्यक्ष का पेशा भी तकनीकी-दक्षता की माँग करता है, जिसे सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के द्वारा हासिल किया जा सकता है। प्रस्तुत है इस पेशे से संबद्ध कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ—

(1) योग्यता और पाठ्यक्रम

- पुस्तकालय-विज्ञान (लाइब्रेरी साइंस) विषय के अध्ययन हेतु किसी भी विषय में स्नातक होना अनिवार्य है।
- इस विषय में स्नातक (बैचलर-डिग्री) के पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष की है। स्नातक होने के बाद परास्नातक (मास्टर डिग्री) उपाधि हेतु पाठ्यक्रम की अवधि भी एक वर्ष ही है। तत्पश्चात अभ्यर्थी चाहें तो 'एम-फिल०' एवं 'पी-एच०डी०' भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रमाणपत्र (डिप्लोमा सार्टिफिकेट) के भी पाठ्यक्रम संचालित होते हैं जिनमें प्रवेश लेकर अभ्यर्थी आरम्भिक-ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।
- देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शिक्षा-संस्थानों में पुस्तकालय-विज्ञान विषय का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। इससे संबद्ध प्रवेश-परीक्षा भी होती है जिसे पास करने के बाद अध्ययन हेतु प्रवेश लिया जा सकता है।
- इस विषय के पाठ्यक्रम में पुराने ज्ञान और तौर-तरीकों के अलावा आधुनिक तकनीकें भी जुड़ गयी हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—''इंफार्मेशन-सिस्टम-मैनेजमेंट, क्लासिफिकेशन-सिस्टम्स, बिबलियोग्राफी, डाक्यूमेनटेशन, प्रिजर्वेशन एण्ड कंजर्वेशन ऑफ मैन्यूस्क्रिप्ट, कम्प्यूटर-अप्लीकेशंस, इंफार्मेशन-प्रोसेसिंग, इंडेक्सिंग, आरकाइव्य-मैनेजमेंट'' आदि।

(2) व्यक्तिगत योग्यताएँ

पुस्तकालय-विज्ञान विषय के अध्ययन के साथ इस क्षेत्र में कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति का मानसिक-बौद्धिक लगाव पुस्तकों के साथ विभिन्न विषयों के प्रति भी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त संप्रेक्षण की क्षमता, संगठनात्मक क्षमता, अध्येताओं की आवश्यकता के अनुसार क्रमबद्ध सन्दर्भ-सूची प्रस्तुत करना, नवीनतम सूचनाओं और जानकारियों से युक्त होना आदि महत्त्वपूर्ण है।

(3) कार्य-क्षेत्र

इस विषय में दक्षता प्राप्त व्यक्ति के लिये विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक-संस्थानों, विदेशी दूतावासों, सूचना और अभिलेख केन्द्रों, संग्रहालयों, सरकारी पुस्तकालयों आदि के अतिरिक्त कुछ कम्पनियाँ, जो तथ्य संग्रह करती हैं उनमें भी कार्य-सम्भावनाएँ बनी रहती हैं।

(4) वेतनमान

इस क्रम में विश्वविद्यालयों के नियमानुसार सहायक-पुस्तकालयाध्यक्ष प्रवक्ता के बराबर, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष रीडर के बराबर एवं पुस्तकालयाध्यक्ष प्रोफेसर के समकक्ष वेतन प्राप्त करने के हकदार होते हैं। इसके अलावा विभिन्न संस्थानों में अभ्यर्थी की योग्यता, अनुभव और गुणात्मकता की दृष्टि से वेतन निर्धारित किये जाते हैं।

14वाँ
नई दिल्ली पुस्तक मेला
(शनिवार, 30 अगस्त से रविवार 7 सितम्बर 2008)
प्रगति मैदान, नई दिल्ली में
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
विविध विषयों की नवीनतम पुस्तकों के साथ प्रथम बार उपस्थित हो रहा है।
जिसमें शामिल हैं **हंस** के 'दुर्लभ अंक' व अनेकानेक विशिष्ट प्रकाशन।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

साइबर काल में किताबें

आज इंटरनेट का दौर है। कम से कम समय और न्यूनतम श्रम में अधिक से अधिक सूचनाएँ हासिल कर लेने के लिहाज से इंटरनेट लोगों की बेहतर पसन्द साबित हो रहा है। खासतौर पर व्यवसाय और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए इंटरनेट लगभग एक आवश्यकता के रूप में सामने आया है।

एक आम धारणा यह है कि जब से साइबर का उपयोग हुआ है, पुस्तकें पढ़ने में अब लोगों की दिलचस्पी कम होती जा रही है, क्योंकि एक तो इंटरनेट पर न केवल सूचनाओं का खजाना भरा पड़ा है, बल्कि बहुत-सी पुस्तकें भी स्क्रीन पर पढ़ी जा सकती हैं।

लेकिन लेखन और कला से जुड़े लोगों के लिए किताबें बहुत जरूरी होती हैं। पुस्तकें, हमारी रचनाशीलता, अनुभव और बोध से प्रतीकात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। वे हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाती हैं और हमारे अवधान के केन्द्रीयकरण में सहायक होती हैं। इंटरनेट हमें जानकारी और सूचनाओं के जंगल में छोड़ देता है और हम कभी भी निश्चित नहीं कर पाते कि हम क्या ग्रहण करें? नेट पर लोग तेजी से एक सूचना से दूसरी सूचना पर भटकते रहते हैं, जबकि पुस्तकें हमें विषय के साथ बाँधती हैं। वर्तमान गतिशील समाज में मानसिक ठहराव के लिए किताबें शायद ज्यादा जरूरी हैं। वे हमें रास्ता दिखाती हैं। साइबर के पास अनेक स्रोत हैं, लेकिन मूल स्रोत तो पुस्तकें ही होती हैं। किताबों के अभाव में इंटरनेट पर प्राप्त जानकारियाँ कितनी दरिद्र हो जाएँगी, इसका हम अनुमान सहज ही लगा सकते हैं। सूचनात्मक किताबें, जैसे विभिन्न विषयों के विश्वकोश आदि की निर्भरता शायद पहले से थोड़ी कम भले ही हो गई हो, लेकिन अध्येताओं और शोधवृत्ति वालों के लिए पुस्तकें ही नितांत जरूरी होती हैं। नेट पर उपलब्ध तमाम जानकारियों के बावजूद गहन अध्ययन के लिए हमें किताबों की शरण में ही जाना पड़ता है। किताबों का कोई स्थानापन्न नहीं है। इंटरनेट भी नहीं।

पुस्तकों से हमारा एक आत्मीय रिश्ता बन जाता है। वे हमारी संवेदनशीलता को विकसित करती हैं। हमारा पारिवारिक और सामाजिक जुड़ाव भी किताबों से ही होता है।

'माई कंट्री माई लाइफ' के विवादों पर लगेगा विराम

भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी की आत्मकथा 'माई कंट्री माई लाइफ' से उपजे विवादों को विराम देने के लिए इस पुस्तक का हिन्दी संस्करण इसी महीने बाजार में आ रहा है। पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण में जिन विवादों को लेकर आडवाणी पर अँगुली उठी थी, उसका समाधान 'मेरा देश मेरा जीवन' में कर लिया गया है। आडवाणी के खास और भाजपा प्रवक्ता रविशंकर प्रसाद पुस्तक के हिन्दी संस्करण का विमोचन करेंगे। 800 पृष्ठ की इस पुस्तक की कीमत 395 रुपये रखी गई है।

सिक्किम में हिन्दी का वर्चस्व

इससे बेहतर चीज क्या हो सकती है कि एक अहिन्दीभाषी राज्य में कवि सम्मेलन का आयोजन हो और वहाँ की जनता इसके प्रति सम्मान दिखाए।

प्रकृति की मनोरम वादियों में बसे खूबसूरत राज्य सिक्किम की राजधानी गंगटोक में दैनिक जागरण द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में देश के श्रेष्ठ कवियों ने अपनी रचनाओं से वहाँ के लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। गीतऋषि पद्मश्री गोपालदास नीरज की अध्यक्षता में चल रहे इस अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में सिक्किम के वरिष्ठ मंत्री डीडी भूटिया, जीएम गुरुंग व मंत्रिमण्डल के अन्य सदस्य कार्यक्रम के समापन तक कविताओं का रसपान करते रहे।

विशिष्ट अतिथि मानव संसाधन मंत्री जीएम गुरुंग पर तो सम्मेलन का इतना जबरदस्त प्रभाव पड़ा कि उन्होंने हिन्दी में लगभग 18 मिनट तक मंच से भाषण दिया और वह भी इस क्षमायाचना के साथ कि उन्हें बहुत अच्छी हिन्दी बोलनी नहीं आती। उन्होंने मंच से घोषणा कर डाली कि इस तरह के आयोजन साल में कम से कम तीन बार होने चाहिए। सभागार में कवियों की प्रस्तुतियों पर श्रोता झूम रहे थे और बाहर पड़ रही रिमझिम फुहारों से यह महसूस हो रहा था कि कविताओं का रसपान करने से प्रकृति भी स्वयं को नहीं रोक पा रही है। गंगटोक शहर से लगभग पाँच किलोमीटर दूर स्थित आयोजन स्थल पर श्रोताओं का मजमा लगा हुआ था।

उसे देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि सिक्किम अहिन्दीभाषी राज्य है। यह कार्यक्रम इस बात का गवाह है कि सिक्किम में हिन्दी न केवल लोकप्रिय है बल्कि उसे सम्मान की दृष्टि से भी देखा जाता है।

सरकार की समझ में अब आयी विज्ञान व गणित की पढ़ाई

ज्ञान के मामले में सुपर पॉवर बनने के लिए वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों की बड़ी फौज का सपना देख रही सरकार को विज्ञान और गणित की पढ़ाई का मतलब समझ में आ गया है।

11वीं योजना में सिर्फ सर्वशिक्षा अभियान के तहत ही आठ लाख शिक्षकों की नियुक्ति होनी है। सूत्रों के मुताबिक यह कदम उठाना सबसे ज्यादा जरूरी हो गया था। खासकर, प्राइमरी के बच्चों में एबिलिटी लर्निंग टेस्ट पर एनसीईआरटी की रिपोर्ट के उस खुलासे के बाद कि पाँचवीं में पढ़ने वाले औसतन 45 प्रतिशत बच्चों को गणित का मामूली जोड़-घटाव तक नहीं आता। जबकि विज्ञान के बच्चों की स्थिति भी बदतर ही है। बुनियाद कमजोर होने का ही नतीजा है कि हाईस्कूल और इण्टर की परीक्षाओं में सबसे ज्यादा बच्चे इन्हीं दोनों विषयों में फेल होते हैं। लिहाजा वे इन विषयों को पढ़ने से कतराते हैं।

गणित और विज्ञान की इस स्थिति और भविष्य की जरूरतों के मद्देनजर ही सर्वशिक्षा अभियान के मानक में बदलाव किया गया है। नये प्रावधान के तहत चालू वित्तीय वर्ष (2008-09) से सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत, तीन शिक्षकों की नियुक्ति की स्थिति में एक गणित व एक विज्ञान का जरूर हो।

शोध की चोरी पर प्रोफेसरों को मिलेगी सजा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रशासन ने परिसर में बौद्धिक सम्पदा की चोरी पर लगाम लगाने के लिए मानक तय कर दिए हैं। अब यदि कोई शिक्षक या शोध छात्र अपने किसी सहयोगी के शोध कार्यों की चोरी करते पाया गया तो उसे सजा मिलेगी। शोध छात्रों पर जहाँ शोधपत्र निरस्तीकरण और छात्रवृत्ति रोकने तक का दण्ड लगाया जा सकता है वहीं शिक्षकों पर वेतनवृद्धि रोकने व उन्हें प्रोजेक्ट के पदों से हटाने तक की कार्रवाई की जाएगी।

छह माह पूर्व वनस्पतिशास्त्र विभाग के एक प्रोफेसर ने अपने एक सहयोगी शिक्षक के खिलाफ शोध के आँकड़े चुराने का आरोप लगाया था। इस मामले में जाँच हुई तो आरोप सिद्ध भी हो गए लेकिन सजा को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन अक्षम साबित हो गया। सूत्र बताते हैं कि उक्त घटना के बाद 'साहित्यिक चोरी' के मानक व उसकी सजा तय करने के लिए विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो० बी०डी० सिंह की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया। इसमें राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो० आर०पी० पाठक व आईटी के संकाय प्रमुख प्रो० जेएन सिन्हा को सदस्य व उप कुलसचिव डॉ० सी०एल० यादव को सचिव के तौर पर शामिल किया गया। कमेटी ने कई बैठकों के बाद विश्वविद्यालय में ऐसे 'साहित्यिक चोरी' के मानक तैयार किए। विश्वविद्यालय प्रशासन ने सभी संस्थानों, संकायों को पत्र प्रेषित कर शोध व आँकड़े की चोरी सिद्ध होने पर दी जाने वाली सजा के बाबत जानकारी दी। तय मानक के हिसाब से शोध या आँकड़े चोरी का आरोप सिद्ध होने पर शिक्षकों की तीन वेतनवृद्धि पर रोक, प्रशासनिक दायित्व से वंचित, दस वर्षों के लिए शोधकार्य पर पाबंदी लगा दी जाएगी। कौन सी

सजा दी जाएगी यह आरोप की गम्भीरता पर निर्भर होगा। इसी तरह से शोध छात्र को साहित्यिक चोरी में लिप्त पाए जाने पर उसकी पीएचडी निरस्त करने, भविष्य में दाखिले व नियुक्ति पर रोक लगा दी जाएगी।

आस्ट्रेलिया में प्रकाशित होगी मलयालम पत्रिका

आस्ट्रेलिया में मलयालियों (करीब 30 हजार) की बड़ी संख्या को देखते हुए 28 जून से एक मलयालम पत्रिका का प्रकाशन शुरू होने जा रहा है। इस पत्रिका का नाम 'इण्डियन मलयाली' होगा। इसमें पाठक अपनी भाषा में भारत से जुड़ी खबरें भी पढ़ सकेंगे। पत्रिका की सम्पादक अजीठा चिरायिल के अनुसार यह आस्ट्रेलिया में अपनी तरह की पहली पत्रिका होगी।

हिन्दी : यू-एस-ए

संस्कृति, संस्कार और अपनी मूल पहचान को बनाये रखने के लिये अपनी भाषा से जुड़ा रहना जरूरी है। इस सत्य को अमेरिका-कनाडा में बसे भारतवंशी अच्छी तरह से जानते हैं। वहाँ कई शहरों में तीसरी पीढ़ी को हिन्दी सिखाने की मुहिम चल रही है। इसके लिये प्रवासियों ने अपने बूते पर कई स्कूल शुरू करके हिन्दी सिखाने का अभियान छेड़ दिया है।

आज अमेरिका के लगभग हर शहर में इस मुहिम के रंग भरने शुरू हो गये हैं। अमेरिका के न्यूजर्सी में *हिन्दी यूएसए* ने इस मुहिम को अत्यन्त योजनाबद्ध तरीके से तेज किया है। *हिन्दी यूएसए* के संचालक देवेन्द्र सिंह व उनके साथियों ने 'हिन्दी की अगर हम सब इक ज्योति जला पायें, तब साथ जुड़ेंगे सब, बच्चे भी सँवर जायें' के उद्घोष के साथ मुहिम शुरू करते हुए न्यूजर्सी व कनाडा में 25 स्कूल स्थापित किये हैं, जिनमें लगभग डेढ़ हजार बच्चे हिन्दी सीख रहे हैं। 5 से 15 साल आयु वर्ग के इन बच्चों को अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, हिन्दी बोलना, पढ़ना व लिखना सिखाने के साथ शुद्ध उच्चारण सिखाया जाता है।

हिन्दी यूएसए ने पाठ्यक्रम के अनुसार 8 पुस्तकें तैयार की हैं। इस मुहिम में 115 से अधिक प्रवासी स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं और इसे लगातार विस्तार देने की कोशिशें जारी हैं।

यहाँ बच्चों को भारतीय त्योहारों, उत्सवों, मौसम, संस्कारों, गौरवशाली इतिहास व प्रेरक महापुरुषों के बारे में जानकारियाँ देकर उत्सव मनाये जाते हैं। गीत, संगीत, नाटक आदि की प्रतियोगिताएँ होती हैं। देवेन्द्र सिंह कहते हैं, ''मुहिम में भारतवंशी तेजी से जुड़ रहे हैं। हम सबकी साझा कोशिश है कि हमारी तीसरी पीढ़ी हिन्दी के साथ हिन्दुस्तान को भी आत्मीयता से जान व समझ सके।''

डॉ० विधानचन्द्र राय के व्यंग्य-विनोद

पश्चिमी बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ० विधानचन्द्र राय जहाँ मजे हुए राजनीतिज्ञ थे, साथ ही ये उच्चकोटि के चिकित्सक भी थे। प्रशासन का भार सँभालते हुए भी वे नित्य पाँच मरीजों को सुबह-सुबह अवश्य देखते थे। प्रख्यात हास्य कवि तथा हिन्दीसेवी पं० गोपालप्रसाद व्यास जब विधानसभा के सदस्य सेठ रामकुमार भुवालका की सिफारिश से अपने नेत्र रोग को दिखाने विधान बाबू के रुग्णालय में पहुँचे और डॉक्टर साहब से मुखातिब हुए तो उन्हें देखते ही डॉ० राय बोले—मेरे पास क्यों आये हो? व्यासजी ने भी उसी लहज़े में जवाब दिया—आपको आँख दिखाने। पुर मज़ाक विधान बाबू बोल पड़े—बंगाल में कोई मुझे आँख नहीं दिखा सकता और दूसरे ही क्षण स्वर में नम्रता लाकर बोले—मैं तो आँखों का डॉक्टर नहीं हूँ। व्यासजी कब चूकने वाले थे, बोले—लेकिन आँख के मरीज तो रहे हैं। तभी तो नेत्र कष्ट से मुक्ति पाने के लिए वियेना जाकर आपने इलाज कराया था। बात आई गई हो गई। विधान बाबू ने टार्च से आँखें देखी, नुस्खा लिखने के पहले फिर मज़ाक पर उतर आये। कहा—तुम्हारे लिए दो नुस्खे तजवीज्ज़ करता हूँ। पहले यह बताओ कि तुम आस्तिक हो या नास्तिक? उत्तर मिला—अभी तक निश्चय नहीं कर पाया हूँ। विधान बाबू बोले—निश्चय कर लो। यदि आस्तिक हो तो आँखों से ध्यान हटाओ और भगवान् में लगाओ। यदि नास्तिक हो तो किसी लड़की से प्रेम करो।

कवि हृदय व्यासजी का मन प्रफुल्लित हो गया। मन में गुदगुदी उठी तो बंगाल के उस तेजस्वी राजनीतिज्ञ को कहा—विधान बाबू, मुझे दूसरा नुस्खा (किसी सुन्दरी से प्रेम करने का) पसन्द है। आपने उपचार बताया तो दवा का भी प्रबन्ध कीजिए। स्वप्रान्त के गर्व से गर्वित विधान बाबू बोले—पछाँह के किसी आदमी से हमारी कोई बंगाली लड़की प्रेम नहीं कर सकती। फिर मुस्करा कर बोले—यदि ऐसी दवा मुझे ही मिली होती तो मैं क्या अब तक कुँवारा ही रहता? विधान बाबू आजीवन अविवाहित रहे थे।

—डॉ० भवानीलाल भारतीय

''जिस दिन विज्ञान जीवन-शक्ति पर विजय पायेगा, उसी दिन से संसार के स्वरूप में एक महान् परिवर्तन हो जाएगा और उसी दिन से यहाँ के निवासी भी, स्वर्ग के सुविख्यात देवताओं के समक्ष अपने को अमर कहने का दावा कर सकेंगे।'' **—महाकवि निराला**

काशी के सशक्त हस्ताक्षर

विद्वान लेखक एवं प्राध्यापक : एक रूपरेखा

अर्जुन तिवारी

एम०ए० (अंग्रेजी, हिन्दी), पत्रकारिता में पी०-एचडी०

[*देवढ़िया, परसागढ़, सारण में 24 अक्टूबर 1941 को जन्म*]

अकादमिक नियुक्तियाँ : पत्रकारिता विभागाध्यक्ष (1996-2002), काशी विद्यापीठ, वाराणसी, सलाहकार (2002-2004), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, सन् 2005 में विजिटिंग फेलो, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, वरिष्ठ परामर्शदाता (2006-2008), उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

प्रकाशित रचनाएँ : स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता, आधुनिक पत्रकारिता, हिन्दी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास, इतिहास निर्माता पत्रकार, ई-जर्नलिज़्म, सम्पूर्ण पत्रकारिता, जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार, ब्रह्मर्षि देवराहा दर्शन, हिन्दी व्याकरण और रचना।

पुरस्कार-सम्मान : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 1988, 1999 में नामित पुरस्कार से सम्मानित, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, कर्नाटक द्वारा पदक प्राप्त, दिव्य रजत पदक से सम्मानित।

मानद उपलब्धियाँ : पत्रकारिता भूषण, पूर्वांचल रत्न, साहित्य गौरव।

आगामी योजनाएँ : काशी पत्रकारिता पीठ को राष्ट्रीय स्तर की संस्था बनाना, अनुकरणीय पत्रकारों की थाती को संजोना।

क्या खोया/क्या पाया : प्रेरणास्रोत पुरुषोत्तमदास मोदी को खोया किन्तु उनका शुभाशीष निरन्तर प्राप्त हो रहा है, इसीलिए तमाम कंटकों को पार कर कुछ हासिल कर रहा हूँ।

महत्त्वपूर्ण सन्देश : पढ़ने और लिखने का व्यसन अपनाकर जिन्दगी को सार्थक किया जा सकता है।

सम्पर्क : शाण्डिल्य, एन०-10/29 के-1,
जानकी नगर, बजरडीहा, वाराणसी-221109
फोन : 0542-2322929, 09415983543
ई-मेल : tiwarijiarjun@yahoo.com

सम्प्रति : विजिटिंग प्रोफेसर, पं० रामजी मिश्र 'मनोहर' पत्रकारिता पीठ, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, मोराबादी कैम्पस, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

सम्मान-पुरस्कार

अनीता वर्मा को बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान

हिन्दी की भावप्रवण युवा कवयित्री **अनीता वर्मा** को उनके प्रथम कविता संग्रह 'एक जन्म में सब' तथा हिन्दी कविता में उल्लेखनीय योगदान के लिए राँची में वर्ष 2006 का बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान प्रदान किया गया।

इस समारोह के लिए विशेष रूप से आमंत्रित हिन्दी जगत के प्रख्यात कवि हस्ताक्षरों सर्वश्री मंगलेश डबराल, लीलाधर मंडलोई, अष्टभुजा शुक्ल, कात्यायनी, एकान्त श्रीवास्तव और निर्मला पुतुल ने भी मंच से अनीता वर्मा की कविताओं की भावभूमि और काव्यात्मक अवदान पर सकारात्मक चर्चा करते हुए उनमें व्यापक सम्भावनाओं की तलाश की।

तेईस पत्रकार सम्मानित

इण्डियन टी०वी० के चेयरमैन रजत शर्मा व सांध्य टाइम्स के सम्पादक सत सोनी ने आयोजित एक समारोह में 23 पत्रकारों को स्मृतिचिह्न, प्रशस्तिपत्र, कलम और शाल प्रदान कर सम्मानित किया। पुरस्कार विजेताओं में **सत्यकाम अभिषेक**-'वार्ता', **मिताली मोहंती घोष**-'यूएनआई', **कनक**-'भाषा', **मनोज सी जी**-'पीटीआई', **अभिषेक दस्तीदार**-'एचटी', **प्रशांत सोनी**-एनबीटी, **शशिकांत वत्स**-'हिन्दुस्तान', **शोभन सिंह**-'पंजाब केसरी', **अरशद फरीदी**-'दैनिक जागरण', **प्रियरंजन**-'जनसत्ता', **रत्नेश मिश्रा**-'राष्ट्रीय सहारा', **अरविन्द सिंह**-'अमर उजाला', **रजनीकांत वशिष्ठ**-'नवभारत'-भोपाल, **सुदेशकुमार वर्मा**-'इण्डिया न्यूज', **निर्मल धानकड**-'दूरदर्शन', **भीमप्रकाश शर्मा**-'आकाशवाणी', **सुमन कांसरा**-'टी०वी० टुडे', **संजय काव**-'सहारा समय', **राजेश मिश्रा**-'शक्ति चैनल', **अश्विनी त्रिपाठी**-'एमएच-वन' को सम्मानित किया गया।

फोटोग्राफरों को पुरस्कार : 'मेट्रो नाउ ईवनिंग' के **नरेश शर्मा**, 'पीटीआई' के **मानवेन्द्र वशिष्ठ** को दिया गया। इस अवसर पर **योगेश छाबड़ा** और **विनय कंसल** को भी सम्मानित किया गया।

संस्कृत विद्वान् सम्मानित

दिल्ली संस्कृत अकादमी ने अखिल भारतीय संस्कृत प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह 2007-08 में संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के 60 से ज्यादा विद्वानों को सम्मानित किया। इसके अलावा भारतीय श्लोक समस्या-पूर्ति के लिए देश के 16 संस्कृत विद्वानों, लघु कथा लेखन के लिए 15 संस्कृत विद्वानों, लघु नाटक के लिए 14 विद्वानों को, जबकि संस्कृत शोध निबन्ध के लिए एक संस्कृत विद्वान् को दस हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया गया। 'संस्कृत शिक्षक पुरस्कार' के तहत दिल्ली के पाँच शिक्षकों को सात-सात हजार रुपये, शॉल, प्रमाण-पत्र और साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

चित्रकला संगम सम्मान

विगत दिनों 'चित्रकला संगम सम्मान' वर्ष 2008 साहित्य के लिए **डॉ० हरीश नवल**, संगीत-नृत्य के लिए **सुश्री शिवाश्री व्यास**, कला के लिए **सुश्री अल्का आर्य**, कार्टून के लिए **श्री सुधीर तैलंग** तथा फोटोग्राफी के लिए **श्री एस०पाल** को प्रदान किए गए। पुरस्कार में 21-21 हजार रुपये की राशि और प्रशस्ति-पत्र दिए गए।

'राष्ट्रधर्म' कहानी प्रतियोगिता पुरस्कार

'राष्ट्रधर्म' मासिक द्वारा आयोजित राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अ०भा० हिन्दी कहानी प्रतियोगिता में 7,000 रुपये का प्रथम पुरस्कार **सुश्री अंजु दुआ जैमिनी** को 'मजबूर कौन' कहानी के लिए; 5,000 रुपये का द्वितीय पुरस्कार **सुश्री कृतिका केसरी** को 'आ अब लौट चलें' के लिए, 3,000 रुपये का तृतीय पुरस्कार **डॉ० निरुपमा राय** को 'जनता दरबार' के लिए, 1,500 रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार **सुश्री कल्पना कुलश्रेष्ठ** को 'और परी चली गई' के लिए, **डॉ० अमिता दुबे** को 'अस्तित्व' के लिए और **श्री ओमप्रकाश मिश्र** को 'एक इबारत यह भी' कहानी के लिए दिया गया।

अखिल भारतीय हिन्दी व्यंग्य लेख प्रतियोगिता पुरस्कार

लोक कल्याण समिति, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रायोजित अ०भा० हिन्दी व्यंग्य लेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत 5,000 रुपये का प्रथम पुरस्कार **श्री कैलाशचन्द्र जोशी 'डुंगराकोटी'** को 'मामला विचाराधीन है' के लिए, 3,000 रुपये का द्वितीय पुरस्कार **श्री सत्यवान नायक** 'राष्ट्रवादी जूते' के लिए, 2,000 रुपये का तृतीय पुरस्कार **श्री जगदीश ज्वलंत** को 'हार पर आत्ममंथन' के लिए तथा 1,000 रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार **श्री रामसहाय वर्मा** को 'यह सरकारी कार्यालय है' के लिए, **श्री बिहारी दुबे** को 'जमघट अनसुलझे सवालों का' के लिए तथा **सुश्री रंजना जायसवाल** को 'मूँदे आँखि कतहुँ कोउ नाहीं' के लिए प्रदान किए गए।

'जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान' दिनकर कुमार को

कोलकाता की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'अपनी भाषा' का वर्ष 2008 का 'जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान', हिन्दी-असमिया के बीच सेतु निर्मित करने वाले रचनाकार दिनकर कुमार को प्रदान किया गया। असमिया से हिन्दी एवं हिन्दी से असमिया में करीब चालीस से अधिक कृतियों का अनुवाद कर चुके श्री दिनकर कुमार ने कहा कि हिन्दी में अनुवाद की परम्परा बहुत पुरानी है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी ने बाबा राघव दास व कमल नारायणदेव को असम में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए भेजा था। उन लोगों ने असमिया भाषा को सीखा व असमिया से कई पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया।

डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान से विभूषित

रायपुर में 25 मई, 2008 को आयोजित एक गरिमामय समारोह में गोरखपुर से पिछले तीन दशकों से अनवरत निकल रही त्रैमासिक पत्रिका 'दस्तावेज' के सम्पादक **डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** को प्रख्यात लेखक विनोद कुमार शुक्ल ने शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र और ग्यारह हजार रुपये नगद देकर पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान से विभूषित किया।

विनोदकुमार शुक्ल ने कहा कि साहित्यिक पत्रकारिता में अपने अवदान, तेवर के लिए 'दस्तावेज' को पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान मिलने और इसके सम्पादक डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी की उपस्थिति से यह सम्मान ही सम्मानित हुआ है।

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य और पत्रकारिता दोनों के लक्ष्य समान हैं और संवेदना, सहिष्णुता से ही पत्रकारिता, साहित्य और साहित्यिक पत्रकारिता में नये आयाम स्थापित किए जा सकते हैं।

कादयान की पुस्तक को पुरस्कार

प्रसिद्ध छायाकार व लोक संस्कृति लेखक ओमप्रकाश कादयान की पुस्तक 'हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर' को हरियाणा साहित्य अकादमी ने वर्ष 2006-2007 के लिये लोक साहित्य वर्ग में वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के रूप में चुना है।

यह पुस्तक हरियाणा की सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत को हमारे सामने उजागर करती है।

प्रो० सुधाकर को शिक्षा रत्न

इण्डिया इण्टरनेशनल फ्रेंडशिप सोसाइटी (नई दिल्ली) ने 'शिक्षा रत्न' पुरस्कार के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हिन्दी विभाग में **प्रो० सुधाकर सिंह** का चयन किया है।

श्री रमेश सोबती सम्मानित

अहिन्दीभाषी हिन्दी लेखक संघ, नई दिल्ली द्वारा पंजाब के सुप्रसिद्ध लेखक, कवि एवं समीक्षक **श्री रमेश सोबती** को उनकी दीर्घकालीन साहित्यिक सेवाओं के लिए 2100 रुपये नगद, प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनकी सद्य: प्रकाशित काव्य कृति 'ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में' का लोकार्पण भी दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने किया।

सदाशिव कौतुक को भारत भाषा भूषण

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल द्वारा इन्दौरवासी साहित्यकार **श्री सदाशिव कौतुक** को 'भारत भाषा भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत

डॉ० भीमराव अम्बेडकर आगरा विश्वविद्यालय, आगरा के इतिहास एवं संस्कृति विभाग के विभागाध्यक्ष **प्रो० सुगम आनन्द** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा उनकी पुस्तक 'भारतीय इतिहास में नारी' पर इतिहास विषय का बीस हजार रुपये का आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं वरिष्ठ साहित्यकार **श्री आर०पी० मित्तल** को उनकी पुस्तक 'क्या ईश्वर है? है तो क्या' के लिए वर्ष 2004 का भगवान दास पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत भी बीस हजार रुपये दिये जाते हैं।

युवा लेखक एम० मुबीन को मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार 2006

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा, उपमुख्यमंत्री श्री आर०आर० पाटिल एवं संगीतकार उमर खैयाम की उपस्थिति में पश्चिम रेलवे के प्रबन्धक आलोक झिंगरन के हाथों, उपन्यास 'रेवड़' के आधार पर युवा लेखक **श्री एम० मुबीन**, भिवण्डी को 'मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार 2006' (रु० 25,000, स्मृति चिह्न, शॉल, श्रीफल) प्रदान किया गया।

हिन्दुस्तानी एकेडमी सम्मान समारोह

इलाहाबाद में हिन्दुस्तानी एकेडमी द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें शहर के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों को सम्मानित किया गया।

सम्मानित विद्वानों में डॉ० शिव गोपाल मिश्र, प्रो० सुरेशचन्द्र पाण्डेय, डॉ० मत्स्येन्द्रनाथ शुक्ल, डॉ० रामकिशोर शर्मा, प्रो० हरिदत्त शर्मा और डॉ० उर्मिला जैन को शाल उढ़ाकर, सरस्वती प्रतिमा व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री राकेशधर त्रिपाठी ने एकेडमी की पुस्तक 'प्रयाग प्रदीप' का लोकार्पण भी किया।

डॉ० त्रिपाठी ने विद्वानों का आह्वान किया कि देवनागरी को बचाने हेतु गम्भीर प्रयास होना चाहिए। अध्यक्षीय सम्बोधन में न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त ने कहा कि इलाहाबाद साहित्यिक विद्वानों का नगर है लेकिन आज उनकी स्थिति ठीक नहीं, सरस्वती की आराधना के साथ उन्हें लक्ष्मी के भी दर्शन कराना जरूरी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्त्व को अवरुद्ध करने का कुत्सित प्रयास हो रहा है जिसके प्रति हिन्दी विद्वानों को सतर्क रहना होगा।

पंचारिया गुरुजी सम्मानित

गुलेदगुड्ड (कर्नाटक) के स्थानीय हिन्दीसेवी अनुवादक **श्री एस०के० पंचारिया 'गुरुजी'** को अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा राष्ट्रीय-प्रतिभा-सम्मान 2008 के अन्तर्गत, उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए 'कलम-कलाधर' की मानद सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया है। उपर्युक्त सम्मान के अलावा साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियावाँ, प्रतापगढ़ (उ०प्र०) द्वारा आपके सम्पूर्ण कृतित्व के लिए आपको 'साहित्य-मार्तंड' से विभूषित करने हेतु चयन हुआ है।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

विद्यालय

पुस्तकों का संकलन हो आज के युग का वास्तविक विद्यालय है। **—कार्लाइल**

मित्र और मित्र

आज के लिये और सदा के लिये सबसे बड़ा मित्र है, अच्छी पुस्तक। **—टपर**

उपवन

पुस्तक जेब में रखा हुआ बाग़ (उपवन) है। **—अरबी कहावत**

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान

नया हैदराबाद, लखनऊ-226007
फोन : 2780251, फैक्स : (0522) 2781352
वेबसाइट : upsanskritsansthanam.org

पुरस्कारों हेतु आवदेन आमंत्रित

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा वर्ष 2008-09 के अधोलिखित पुरस्कारों हेतु निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन-पत्र 31 जुलाई 2008 तक आमंत्रित हैं।

1. विश्वभारती पुरस्कार (एक) रु० 2,51,000/-
2. महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार (एक) रु० 1,00,000/-
3. महर्षि व्यास पुरस्कार (एक) रु० 1,00,000/-
4. नारद पुरस्कार (एक) रु० 51,000/-
5. विशिष्ट पुरस्कार (पाँच) रु० 51,000/- प्रत्येक
6. नामित पुरस्कार (पाँच) रु० 25,000/- प्रत्येक (क) कालिदास पुरस्कार, (ख) बाणभट्ट पुरस्कार, (ग) शंकर पुरस्कार, (घ) सायण पुरस्कार, (ङ) पाणिनी पुरस्कार
7. वेद पण्डित पुरस्कार (दस) रु० 25,000/- प्रत्येक
8. विशेष पुरस्कार (छ:) रु० 11,000/- प्रत्येक
9. विविध पुरस्कार (बीस) रु० 5,000/- प्रत्येक (क) साहित्य पुरस्कार (दस), (ख) शास्त्र पुरस्कार (छ:), (ग) बाल-साहित्य पुरस्कार (दो), (घ) श्रमण पुरस्कार (दो)

विस्तृत सूचना तथा आवेदन पत्र प्रारूप संस्थान वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

पं० प्रतापनारायण मिश्र-स्मृति-युवा साहित्यकार सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

प्रत्येक निम्न विधा में से एक साहित्यकार का चयन किया जायेगा। ये विधाएँ हैं—

(1) कविता (काव्य), (2) कथा-साहित्य, (3) नाटक (रंगमंच), (4) बाल-साहित्य, (5) पत्रकारिता, (6) संस्कृत एवं (7) नेपाली भाषा

सभी चयनित युवा साहित्यकारों को सम्मान में प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र एवं रु० 5000/- की नकद राशि न्यास द्वारा भेंट की जायेगी।

त्रयोदश सम्मान-समारोह में शामिल होने के लिए 40 वर्ष तक की आयु के साहित्यकार ही अपने छाया-चित्र सहित आत्मकथ्य (बायोडाटा) अपनी सम्पूर्ण कृतियों का समीक्षात्मक परिचय तथा प्रकाशित नमूने की किसी पुस्तक के साथ 31 जुलाई 2008 तक निम्न पते पर भेज सकते हैं—

डॉ० गणेशदत्त सारस्वत, *संयोजक* चयन समिति, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ-226020

इतिहास, कला और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

[बी०ए०, एम०ए० तथा शोधार्थियों हेतु]

STUDIES IN INDIAN ART

Vasudeo Sharan Agrawal

Page : 304 + 10 (Plate) **Second Edition :** 2003

Indian art is to be studied at two different levels, viz. the external form and the inner meaning. Up to now it has been usual to approach Indian art from the external point of view, i.e. the objective description of images, statuary, architectural buildings and monuments. That is quite correct and essential as the primary basis of approach. But there is also the other side of the medal, viz. the esoteric side which consists in the study of meaning and purpose of art of which the roots lie hidden in Indian religion and philosophy. By looking at these two with equal insight one may be able to recover the true and full significance of the Indian Mind as expressed in the creations of art.

Price : H.B. : **400.00** ISBN : 81-7124-335-5

प्राचीन भारत

डॉ० राजबली पाण्डेय व डॉ० विभा उपाध्याय

पृष्ठ : **संस्करण :** 2008

प्राचीन भारत का इतिहास मानव इतिहास का एक बड़ा लम्बा अध्याय है। भारतीयों ने विस्तृत भूभाग पर सहस्राब्दियों तक जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रयोग और उससे अनुभव प्राप्त किया। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें उनकी देन न हो। अत: उनका इतिहास मनोरंजक और शिक्षा-प्रद है। गत दो शतियों में इस विषय पर विदेशी और देशी विद्वानों ने लेखनी उठायी है। सबकी विशेषतायें हैं, परन्तु सबकी सीमायें और कुंठायें भी हैं। इससे भारत के प्राचीन इतिहास को समझने में अनेक समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसमें प्राचीन भारत के सम्बन्ध में सुव्यवस्थित ज्ञान तो मिलेगा ही, साथ ही साथ अधकचरे अध्ययन से उत्पन्न बहुत-सी भ्रान्तियों का निराकरण भी होगा।

(शीघ्र प्रकाश्य पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)

प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व अभिलेख एवं मुद्राएँ

डॉ० नीहारिका

पृष्ठ : 316 + 8 (Plate) **द्वितीय संस्करण :** 2007

यह पुस्तक अपने नाम के अनुरूप इतिहास के तीन आधार स्तम्भों को अपने कलेवर में समेटे हैं। इतिहास की पुनर्रचना एवं लेखन में पुरातत्त्व के साथ ही अभिलेखों और मुद्राओं का महत्त्व सर्वविदित है। इन तीनों विधाओं का समग्र रूप इस पुस्तक में सम्मिलित है। पुरातत्त्व का योगदान विश्व परिदृश्य पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और भारत में भी इसका महत्त्व असंदिग्ध है। अभिलेखों और सिक्कों का महत्त्व इस सन्दर्भ में अकथनीय है। महान् सम्राट अशोक के विचारों, कार्यों और उसकी महान् उपलब्धियों पर अभिलेखों द्वारा जो प्रकाश पड़ता है, वह अन्य किसी भी साधन द्वारा सम्भव नहीं है। आहत एवं ढलुआँ सिक्कों से प्राप्त अनेकानेक राजाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन सिक्के ही हैं। पुरातत्त्व, अभिलेख एवं सिक्के ये तीनों एक साथ समग्र रूप से एक ही पुस्तक में नहीं सुलभ हो पाते हैं।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-388-6
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-391-6

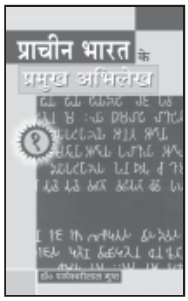

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ : 232 **पंचम संस्करण :** 2007

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रामाणिक अध्ययन में अभिलेखों का विशिष्ट महत्त्व हैं, इस क्षेत्र में इनका बहुत बड़ा योगदान है।

इस संग्रह में न केवल अभिलेखों का मूल संगृहीत है, वरन् उनके साथ उनका अनुवाद भी सूचनात्मक टिप्पणियों के साथ है। संग्रह में अशोक के प्राय: सभी तथा मौर्योत्तरकाल से गुप्त-पूर्व काल तक के चुने हुए 41 अभिलेख हैं। इनके अतिरिक्त शक और कुषाण शासकों से सम्बद्ध चार अभिलेख भी दिए गए हैं। अभिलेखों पर विचार करते समय मुद्रा तात्विक सामग्री का भी यत्र-तत्र उपयोग किया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-572-7
अजिल्द : **100.00** ISBN : 978-81-7124-573-4

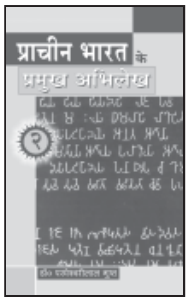

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ : 228 **पंचम संस्करण :** 2008

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रामाणिक अध्ययन में अभिलेखों का विशिष्ट महत्त्व हैं, इस क्षेत्र में इनका बहुत बड़ा योगदान है।

इस संग्रह में न केवल अभिलेखों का मूल संगृहीत है, वरन् उनके साथ उनका अनुवाद भी सूचनात्मक टिप्पणियों के साथ है। संग्रह के इस द्वितीय खण्ड में गुप्त सम्राटों के काल के 61 अभिलेख हैं। इस संग्रह की उपयोगिता, अभिलेखों के संकलन की अपेक्षा उनके अनुवाद और उन पर दी गयी टिप्पणियों में ही निहित है। अभिलेखों पर विचार करते समय मुद्रा तात्त्विक सामग्री का भी यत्र-तत्र उपयोग किया

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-595-6
अजिल्द : **100.00** ISBN : 978-81-7124-596-3

प्राचीन भारतीय कला एवम् वास्तु

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ : 488 + 32 (Plate) **संस्करण :** 2007

क्राउन अठपेजी

सौन्दर्य-शास्त्र एवं शिल्प-विधाओं की दृष्टि से भारतीय कला के क्रमिक विकास-चरणों का सविशेष अध्ययन अब अत्यन्त रोचक विशेषज्ञ-शास्त्र बन चुका है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की उच्चस्तरीय शिक्षा-पद्धति में आज उसका पठन-पाठन सर्वत्र प्रचलित विषय है।

हिन्दी माध्यम में इस विषय की समुचित पाठ्य-पुस्तकों का प्राय: अभाव-सा रहा है। उसी आवश्यकता की विशेष पूर्ति के लिए प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गई है जिसमें विषय-वस्तु का सविस्तार एवं शास्त्रीय अध्ययन विद्वान् लेखक द्वारा किया गया है। प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु के सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों का यहाँ ब्योरेवार लेखा-जोखा है। साथ में दिए गए साढ़े ग्यारह सौ रेखांकन तथा 24 फलकों में प्रस्तुत 65 छविचित्र उन-उन युगों की वस्तुत: प्रत्येक अपेक्षित वास्तु-रचना और शिल्पकृति से अध्येताओं तथा विद्यार्थियों का सीधे परिचय कराते हैं। इस प्रकार यह अपने विषय का न केवल विस्तार-पूर्वक विवेचन करने वाला स्रोत ग्रन्थ है प्रत्युत प्राचीन भारतीय कला-वस्तुओं का चित्रात्मक आकर-कोष है।

मूल्य : सजिल्द : **700.00** ISBN : 81-7124-313-4
अजिल्द : **500.00** ISBN : 81-7124-546-3

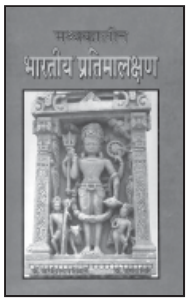

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण

डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी
डॉ० कमल गिरि

पृष्ठ : 404 + 82 (Plate) **संस्करण :** 1997

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण शीर्षक पुस्तक में सातवीं से तेरहवीं शती ई० के मध्य की देवमूर्तियों का ऐतिहासिक दृष्टि से लक्षणपरक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों और सोच की पृष्ठभूमि में हुआ है। मध्यकालीन देवमूर्तियों के स्वरूप और उनके लक्षणों की विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। साथ ही तत्कालीन देवमूर्तियों में सामाजिक सामंजस्य और धार्मिक सौहार्द भी प्रतिध्वनित है। जिसकी जानकारी वर्तमान विसंगतियों के सन्दर्भ में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

पुस्तक में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन प्रतिमालक्षण का संभवत: पहली बार एक साथ और विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है जिनमें उनकी तुलनात्मक विशेषताओं को भी रेखांकित किया गया है। तालिकाओं एवं चित्रों के माध्यम से विषय को और भी स्पष्टता प्रदान की गयी है।

मूल्य : सजिल्द : **325.00** ISBN : 81-7124-162-X

प्राचीन भारतीय शासन पद्धति

डॉ० अनंत सदाशिव अलतेकर

पृष्ठ : 332 **संस्करण :** 2005

वैदिक, बौद्ध और जैन वाङ्मय, राजतरंगिणी के समान प्राचीन इतिहास, मेगेस्थनीस, युआनच्वांग सदृश विदेशी इतिहासकार तथा यात्रियों के वृत्तांत, प्राचीन शिलालेखों, दानपत्रों आदि साधनों से प्रत्यक्ष ऐतिहासिक व सत्य से अधिक संबद्ध जो सामग्री प्राप्त होती है, उनका भी सहारा लेकर प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति के साधार, सांगोपांग किन्तु अनतिविस्तृत विवेचन करने का प्रयास इस ग्रन्थ में किया गया है।

प्राचीन भारतीय इतिहास वैदिक, उपनिषद् मौर्य, गुप्त आदि काल खंडों में विभाजित है। विवेचित संस्थाओं और शासनतत्त्वों का विकास ऊपर निर्दिष्ट काल-खण्डों में किस प्रकार हुआ यह दिखाने का प्रयत्न प्रत्येक अध्याय में किया गया है। विभिन्न प्रान्तों में शासन-संस्थाओं का विकास कभी-कभी किस कारण भिन्न प्रकार से हुआ इसे भी बतलाने का, जहाँ संभव था, प्रयत्न किया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-455-6
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-454-8

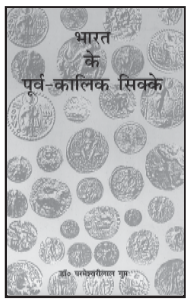

भारत के पूर्व-कालिक सिक्के

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ : 408 + 12 (Plate) **द्वितीय संस्करण :** 2003

भारत में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के मुद्राशास्त्री (numismatist) डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त इस ग्रंथ की पूर्वकालीन (आरम्भ से 12वीं शती ई०) सिक्कों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन इतिहास की जानकारी किस प्रकार होती है, इसका विस्तृत विवेचन पुस्तक में किया गया है। इतिहास तथा पूर्व-कालिक सिक्कों के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मूल्य : सजिल्द : **275.00** ISBN : 81-7124-148-4
अजिल्द : **175.00** ISBN : 81-7124-148-4

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

डॉ० सुश्री शरद सिंह

पृष्ठ : 344 + 12 (Plate) **संस्करण :** 2008

प्राचीन भारत की संस्कृति का निरन्तर प्रवाह एवं सार्वभौम दृष्टि तथा आर्थिक समृद्धि सदैव ही वैश्विक जिज्ञासा का विषय रही है। प्राचीन भारत में समाज की अवधारणा, समाज एवं परिवार का स्वरूप, आश्रम व्यवस्था—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की अवधारणा, वर्ण एवं जाति व्यवस्था, दास प्रथा, स्त्रियों की स्थिति, स्त्रियों के अधिकार, पर्दा प्रथा, शूद्रों की स्थिति व अस्पृश्यता, संस्कार, शिक्षा पद्धति, नैतिकता आदि का ज्ञान वर्तमान में जीवन के मूल्यों को स्थापित करने में आधारभूत स्रोत की भूमिका निभाता है। फलस्वरूप आज का व्यक्ति बार-बार अतीत के पन्ने पलटता है। अतीत की इसी अध्ययन-यात्रा में डॉ० सुश्री शरद सिंह की यह पुस्तक प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

पुस्तक की लेखिका डॉ० सुश्री शरद सिंह एक विदुषी इतिहासकार एवं साहित्यकार हैं। इतिहास एवं साहित्य विषयक इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने विषयवस्तु को इतनी सहज एवं बोधगम्य भाषा-शैली में पिरोया है कि यह पुस्तक निश्चित रूप से प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के विद्यार्थियों, शोधार्थियों के साथ ही अन्य

मूल्य : सजिल्द : **280.00** ISBN : 978-81-7124-592-5
अजिल्द : **180.00** ISBN : 978-81-7124-593-2

भारत के नव-निर्माण का आह्वान

लेखक : **डॉ० डेविड फ्राली**
अनुवादक : **केशवप्रसाद कायाँ**

पृष्ठ : 296 **संस्करण :** 2008

प्रस्तुत ग्रन्थ की विषय-वस्तु है, बौद्धिक स्तर पर पुनरुत्थित हिन्दुत्व की आवश्यकता का दिग्दर्शन कराना। एक ऐसा हिन्दू बुद्धिजीवी वर्ग जो आधुनिक मीडिया, कम्प्यूटर युग (संगणक युग) तथा सूचना तंत्र के विकास की क्रांति से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो। ऐसा अभिनव बुद्धिजीवी वर्ग जो एक ओर सम्यक् रूप से आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी तथा असंख्य हिन्दू विरोधियों की आलोचनाओं का करारा जवाब देने में सक्षम हो, वहीं दूसरी ओर आत्मनिरीक्षण करते हुए हिन्दू-समाज की कमजोरियों तथा सामयिक हिन्दू विचारधारा की न्यूनताओं का भी उद्घाटन कर सके।

सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि हिन्दुओं को विश्व समुदाय के समक्ष अपने विचारों को दृढ़तापूर्वक रखना होगा। हो सकता है कि इससे दूसरे समुदाय यह समझें कि उन्हें चुनौती दी जा रही है तो भी उनके आक्रोश की चिंता न करते हुए हिन्दुओं को अपने विचार स्पष्ट रूप से एवं निर्भीकतापूर्वक रखने होंगे। हिन्दुओं को इस बात से सतर्क रहना होगा कि उनके विरोधी गुट मीडिया (प्रचार तन्त्र) तथा पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से उनके विचारों का विकृतिकरण न कर सकें। हिन्दुओं को अपनी प्राचीन आध्यात्मिक धरोहर की रक्षा के लिए कटिबद्ध होना चाहिए चाहे इसके चलते संकुचित विचारोंवाले समाज से टकराव की स्थिति ही क्यों न पैदा हो। उन्हें सत्य पर ही दृढ़ रहना चाहिये जो आमतौर पर जनप्रिय नहीं होता। हिन्दू बुद्धिजीवियों को प्रत्येक को साग्रह अनुकूल बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि हिन्दुओं को सामाजिक स्तर पर संगठित शक्ति का प्रदर्शन करते हुए धर्म को मन्दिर तथा आश्रम की परिधि से उन्मुक्त करके जीवन तथा संस्कृति के व्यापक आयाम पर प्रतिस्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दू बुद्धिजीवियों को केवल अपने हिन्दू-समाज को ही नहीं सुधारना चाहिए अपितु अपनी महान् यौगिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के सिद्धान्तों के आधार पर अखिल विश्व के कल्याण का भी उद्योग करना चाहिये जो एक ओर तो भौतिकवाद के दलदल में आकण्ठ फँसा हुआ है तथा दूसरी ओर मज़हबी कट्टरता के जाल में आबद्ध है। हिन्दुओं को गम्भीरता से आत्म-मंथन करना चाहिए कि हम विभाजित क्यों हैं तथा सामयिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम क्यों नहीं हो रहे हैं?

हिन्दुओं ने प्राचीन काल में उपर्युक्त दोनों कर्त्तव्यों का समुचित सम्पादन किया था। आधुनिक समय में भी महर्षि अरविन्द तथा स्वामी विवेकानन्द ने पाश्चात्य दर्शन, संस्कृति एवं धर्म की सटीक एवं अकाट्य तर्कों द्वारा आलोचना की, दूसरी ओर अध्यात्म, योग एवं वैदिक प्रतिमान के आधार पर भारत के पुनरुत्थान का प्रयास किया। दुर्भाग्यवश आधुनिक भारत के चिन्तकों ने इन मनीषियों का अनुसरण नहीं किया। ये लोग पथ से भटक गए इसीलिए इतनी सामयिक समस्याओं का निर्माण हुआ है। अब भी समय है कि इस प्रवाह का दिशा-परिवर्तन किया जाय।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'भारत के नव-निर्माण का आह्वान' हिन्दुओं को जागने एवं उठ कर कर्म करने की प्रेरणा का आह्वान करता है।

मूल्य : सजिल्द : **320.00** ISBN : 978-81-89498-29-0
अजिल्द : **225.00** ISBN : 978-81-89498-30-6

उत्तिष्ठ कौन्तेय

डॉ० डेविड फ्रॉली, अनुवादक- **केशव प्रसाद कायाँ**

पृष्ठ : 208

तृतीय संस्करण : 2008

मूल्य : सजिल्द : **250.00**
ISBN : 978-81-89498-22-1
अजिल्द : **175.00**
ISBN : 978-81-89498-23-4

आसन एवं योग मुद्रायें

डॉ० रविन्द्र प्रताप सिंह

पृष्ठ : 206 + 12 (Plate)

संस्करण : 2004

मूल्य : सजिल्द : **250.00**

ISBN : 81-7124-365-7

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

इतिहास, कला और संस्कृति
(HISTORY, ART & CULTURE)

■ प्राचीन इतिहास (Ancient History)

प्राचीन भारत *(नवीन संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण 2008)*	*डॉ० राजबली पाण्डेय*	350 G	200 T
गुप्त साम्राज्य *(नवीन संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)*	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	—	—
प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास *(2008)*	*डॉ० (सुश्री) शरद सिंह*	280 G	180 T
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख *[खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक] (नवीन संस्करण 2007)*	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	150 G	100 T
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख *[खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०] (नवीन संस्करण 2008)*	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	150 G	100 T
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	60 G	45 T
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ *(600 से 1200 ई०)*	*डॉ० ओंकारनाथ सिंह*	100 G	70 T
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा	*डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल*	—	120 S
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *(नवीन संस्करण 2008)*	*डॉ० श्रीराम गोयल*	250 G	150 T
शुंगकालीन भारत	*सच्चिदानन्द त्रिपाठी*	—	50 S
दक्षिण-पूर्व एशिया	*डॉ० शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी*	—	30 S
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	275 G	170 T
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ *(नवीन संस्करण)*	*डॉ० नीहारिका*	250 G	150 T
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला *(पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित)*	*डॉ० बृजभूषण श्रीवास्तव*	320 G	220 T
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति *(नवीन संस्करण)*	*प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर*	250 G	150 T
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा	*डॉ० लल्लनजी गोपाल*	—	150 S
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार	*डॉ० हीरालाल गुप्त*	30 G	—
भारतीय संस्कृति के मूलतत्व *(संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ-चतुष्टय)*	*राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी*	—	60 S
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक	*डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव*	200 G	—
महाभारत का कालनिर्णय *(ज्योतिर्वैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक साक्ष्य के आधार पर)*	*डॉ० मोहनलाल गुप्त*	300 G	—
भारतीय वास्तु-कला *(नवीन संस्करण)*	*डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त*	—	120 T
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु *(नवीन संस्करण)*	*डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल*	700 G	500 S
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था	*डॉ० रेणुका कुमारी*	60 G	—

प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* — 150 S
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ *डॉ० श्रीराम गोयल* — 50 T
ग्रीक भारतीय *(अथवा यवन)* *प्रो० ए० के० नारायण* 300 G —
अयोध्या का राजवंश *नगीना सिंह* — 60 S
गुप्तयुगीन केन्द्रीय प्रशासन *डॉ० सीमा मिश्रा* 280 G —
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु *डॉ० पृथ्वी कुमार अग्रवाल* 200 S —
Studies In Indian Art *Dr. V.S. Agrawal* 400 G —
The Imperial Guptas (Vol. I) *Dr. P.L. Gupta* 200 G —
The Imperial Guptas (Vol. II) *Dr. P.L. Gupta* 200 G
The Administration of Avadh *T.P. Chand* 200 G —

■ प्राचीन धर्म एवं दर्शन (Ancient Religion & Philosphy)

बौद्ध तथा जैन धर्म *(धम्मपद और उत्तराध्ययन सूत्र का एक तुलनात्मक अध्ययन)* *डॉ० महेन्द्र नाथ सिंह* 180 G —
पूर्व मध्यकालीन जैनकला *डॉ० अवधेश यादव* 250 G —
जैन कला तीर्थ : देवगढ़ *डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० शान्ति स्वरूप सिन्हा* — 200 S
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ *डॉ० शान्ति स्वरूप सिन्हा* 250 G —
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* — 90 S
बुद्धकालीन सामाजिक आर्थिक जीवन *डॉ० अखिलेश्वर मिश्र* 180 G —
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ० शीला सिंह* 150 G —
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्याम सुन्दर उपाध्याय* — 75 S
आसन एवं योग मुद्राएं *डॉ० रवीन्द्र प्रताप सिंह* 250 G —
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200 G —

■ मध्यकालीन इतिहास (Medieval History)

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि* 150 G 100 S
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण *डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी (7वीं शती से 13वीं शती)* डॉ० कमल गिरि 325 G —
खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व *डॉ० (सुश्री) शरद सिंह* 400 G —
मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन *(1200-1445)* *डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव* — 80 S
गाहड़वालों का इतिहास (1089-1196) *डॉ० प्रशान्त कश्यप* 220 G —
दिल्ली सल्तनत *(तराइन से पानीपत)(1191-1526)* *डॉ० गणेश प्रसाद बरनवाल* — 50 T
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *(नवीन सं०)* *डॉ० उषा रानी बंसल* — 50 S
मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना *(नवीन सं०)* *डॉ० उषा रानी बंसल* — 100 S
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीलाल* — 60 S

■ आधुनिक इतिहास (Modern History)

स्वतंत्रता आन्दोलन और बनारस *ठाकुर प्रसाद सिंह* 120 G —
एक विश्व : एक संस्कृति *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 150 G
भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती *सम्पा० : सत्य प्रकाश मित्तल* 380 G —
भारतीय संस्कृति की भूमिका *हृदयनारायण दीक्षित* 250 G —
उत्तिष्ठ कौन्तेय *(हिन्दुत्व एवं आधुनिक विश्व)* (2008) *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० : केशव प्रसाद कायां* 250 G 175 S
भारत के नव-निर्माण का आह्वान (प्रथम-2008) *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० : केशव प्रसाद कायां* 320 G 225 S
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ० महेश कुमार शरण* 175 G —
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* 300 G 150 T
गुप्त भारत की खोज *डॉ० पाल ब्रंटन* 200 G 125 S
हमारे देश के सिक्के *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* — 25 T
क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ० सरोज रानी* 200 G —
British Kumaon *P. Whalley,* Intro. by : *R.S. Tolia,* IAS 250 G —

■ इतिहास सन्दर्भ ग्रन्थ (History Reference)

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Varma* 300 G —
Textiles in Ancient India *Dr. Kiran Singh* 200 G —
Life in Ancient India *(c. A.D. 800–1200)* *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100 G —
Albiruni : An Eleventh Century Historian *Dr. Jai Shankar Mishra* 60 G —
India under Wellesley *P.E. Roberts* 200 G —
Growth of Political Awakening in U.P. *(1858–1900)* *Dr. Anand Shankar Singh* 250 G —
Daishik Shastra *(Bharatiya Polity and Political Science)* *Badrishah Thulgharia* 250 G —

■ काशी विषयक पुस्तकें (Kashi, Varanasi, Banaras)

शिव काशी *(पौराणिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान संदर्भ)* *डॉ० प्रतिभा सिंह* प्राक्कथन : *प्रो० राणा पी०बी० सिंह* 400 G —
'हंस' काशी अंक *(1933 ई०) (पुनर्प्रकाशन -2008)* *सम्पादक : प्रेमचंद* 250 G —
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650 G —
काशी की पाण्डित्य-परम्परा *पं० बलदेव उपाध्याय* 600 G —
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300 G —
धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250 G —
काशी का रंग परिवेश *कुँवरजी अग्रवाल* 100 S —
स्वतन्त्रता-आन्दोलन और बनारस *ठाकुरप्रसाद सिंह* 120 G —
1857 का स्वतंत्रता संग्राम★ *डॉ० कन्हैया सिंह* 130 S —
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150 G —
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep* Introduction by : *Dr. O.P. Kejariwal* 800 G —

आगामी प्रकाशन

भारतीय पुरातत्त्व *डॉ० नीहारिका*
इस्लाम और आधुनिक भारत *मुकुट बिहारी लाल*
'हंस' काशी अंक *सम्पादक : प्रेमचंद*
हिन्दू राज्यतंत्र *डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल*

स्मृति-शेष

बज़्मे उर्दू शिवपुरी का रोशन चिराग बुझ गया

उर्दू अदब की अजीम शख़्सियत, उस्ताद शाइर जिन्होंने जिन्दगी भर अपनी ग़ज़लों और नज़्मों से तमाम महफिलों को रोशन किया, जिनकी पेशानी पर कभी भी तनाव के बादल प्रकट नहीं हुए, जिनकी गम्भीरता और सादगी ने अपनों को ही नहीं गैरों को भी प्रभावित किया, **जनाब जहूर अहमद खान 'जहूर'** अब हमारे बीच नहीं रहे। नई दिल्ली में उनका इंतकाल हो गया। उनके निधन से बज़्मे उर्दू, शिवपुरी का रोशन चिराग बुझ गया है, अदबी महफिलों में वीरानगी छा गयी है।

प्रो० वायुनंदन पाण्डेय का अवसान

काशी की आचार्य-परम्परा में संस्कृतभाषा एवं साहित्य के मूर्धन्य विद्वान **प्रो० वायुनंदन पाण्डेय** के अवसान से साहित्य-जगत में एक रिक्ति या शून्यता अनुभव की गयी। डॉ० पाण्डेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में साहित्य विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी परम्परा के छात्रों का दिशा-निर्देश करते हुए आजीवन सारस्वत-साधना करते रहे। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के संस्कृत-संस्थान और अकादमी द्वारा सम्मान प्राप्त डॉ० पाण्डेय के प्रति श्रद्धांजलि।

प्रो० राममूर्ति शर्मा का निधन

देववाणी की परम्परा में दर्शनशास्त्र के विद्वान **आचार्य प्रो० राममूर्ति शर्मा** ने भी इसी मास देह त्याग किया। काशी में वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में (1999-2002) तक कुलपति एवं महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में कार्यकारी कुलपति रह चुके थे। केन्द्र और राज्य सरकारों से सम्मान प्राप्त डॉ० शर्मा को पिछले दिनों मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। डॉ० शर्मा विभिन्न विश्वविद्यालयों में नेशनल लेक्चरर, नेशनल-फेलो समेत कई पदों पर रह चुके थे।

मशहूर शायर सागर खय्यामी का इंतकाल

तंज और मिजाह (हास्य व व्यंग्य) मशहूर शायर **सागर खय्यामी** का आज मुम्बई के नानावटी अस्पताल में इंतकाल हो गया। लखनऊ के मशहूर घराने गुफरामआब से ताल्लुक रखने वाले सागर खय्यामी पूरी जिन्दगी लोगों को हँसाते रहे। उनका पूरा नाम सय्यद रशीदुल हसन नकवी था और तखल्लुस सागर खय्यामी था। जिन्दगी भर लोगों को अपनी तंजिया गजलों से हँसाने वाले 70 वर्षीय हरदिल अजीज शायर आज जब दुनिया से रुखसत हुए तो पुराने शहर में उनके चाहने वालों की आँखों से अश्कों का सैलाब बह निकला। क्रिकेट से विशेष लगाव रखने वाले इस शायर की क्रिकेट पर लिखा गजल संग्रह 'अंडर क्रीज' बेहद मशहूर हुआ। सागर को भारत में तकरीबन सभी प्रदेशों की उर्दू अकादमियों ने सम्मान से नवाजा। वर्ष 1997 में केन्द्र सरकार ने उन्हें मिर्जा गालिब एवार्ड से नवाजा। उनकी लिखी सर्दी, दिल्ली की बस व क्रिकेट आदि नज्में बेहद मशहूर हुईं।

तीसरे सप्तक की कवयित्री कीर्ति चौधरी नहीं रहीं

तीसरा सप्तक की प्रतिष्ठित कवयित्री **कीर्ति चौधरी** का निधन 20 जून को लन्दन में उनके आवास पर निधन हो गया। वह 74 वर्ष की थीं। उनकी कविताओं और कहानियों का समग्र भी इस वर्ष प्रकाशित हुआ था। अज्ञेय के तीन सप्तक में शामिल कीर्ति अपने कहानीकार पति ओंकारनाथ श्रीवास्तव के निधन के बाद लन्दन में अपनी बेटी अतिमा श्रीवास्तव के साथ रह रही थीं।

पं० देवकीनंदन शास्त्री का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन

अंक ज्योति के अप्रतिम विद्वान **पं० देवकी नंदन शास्त्री** का निधन शनिवार, 28 जून 2008 को पंचतत्व में विलीन हो गया। शवयात्रा में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने हिस्सा लिया।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के गोल्ड मेडलिस्ट पं० देवकीनंदन शास्त्री ने वेद व कर्मकाण्ड पर भी कई चर्चित पुस्तकें लिखीं। इन्हें कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले थे।

समवेदना के पत्र

नियमित रूप से 'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त हो रहा है, तदर्थ धन्यवाद। इसी क्रम में डॉ० बच्चन सिंह स्मृति अंक (मई 2008) प्राप्त हुआ। डॉक्टर साहब से जुड़े मेरे व्यक्तिगत संस्मरण, उनका मेरे प्रति आत्मीय व्यवहार, अनुजवत प्यार सब ताजे हो गए। कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनकी स्मृतिकाल भी जल्दी नहीं भुल पाती, वैसे ही लोग में आप थे।

पिछले लगभग 20 वर्षों से मेरी और डॉक्टर साहब की बैठकी प्राय: प्रतिदिन होती थी। अक्सर बहुत महत्त्वपूर्ण साहित्य चर्चा भी होती रहती। पक्षाघात से पीड़ित होने के पहले तक यह क्रम चलता रहा। मृत्यु से डेढ़ वर्ष पूर्व, इस अवस्था में भी उनका ईश्वर की कृपा से स्वास्थ्य अच्छा रहा, तन कर चलते रहे, स्वयं पैदल ही टहलते हुए रथयात्रा तक आ जाते थे। पक्षाघात से पीड़ित जब वह घर पर पड़े थे, तब मैं और मेरे मित्र श्री चन्द्रकुमार साहजी उनसे मिलने 2-3 बार गए। उस समय भी उनकी चेतना बनी थी, मस्तिष्क पूर्ण चैतन्य था, सबको पहचानते थे। अच्छे विद्वान्, ऊँचे दर्जे के साहित्यकार से भी ऊँचे आप समस्त मानवीय गुणों से युक्त एक सहृदय इन्सान थे। आपको बार-बार नमन। ❑ **विनोदकुमार**

रत्नाकर भवन, शिवाला, वाराणसी

पाठकों के पत्र

स्व० मोदीजी के बाद के 'भारतीय वाङ्मय' के अंक... उनकी स्मृति तरोताजा हो आईं... यह स्वाभाविक था, किन्तु साथ ही यह विश्वास दृढ़ हुआ कि पिता की पारदर्शिता और व्यवस्थित कार्य-प्रणाली की विरासत आप दोनों सँभाल ले जाएँगे। मेरी शुभकामना।

हिन्दी से जुड़े सभी लेख एवं अंश अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक रहे। 'काशी के सशक्त हस्ताक्षर' स्तम्भ भी संक्षिप्त, आकर्षक।

— सूर्यबाला

सम्पादकीय 'संवेदना की ओर...' छू गया। स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी की अक्षय कीर्ति 'भारतीय वाङ्मय' निश्चित रूप से सूचनाओं का पिटारा है, ज्ञानवर्द्धक है। **— डॉ० स्वर्ण किरण,** नालंदा

'भारतीय वाङ्मय' जून 2008 संख्या पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विषय पर तथ्यपूर्ण आलोचना अत्यन्त सराहनीय है, हमारी बधाई स्वीकार करें।

— चितरंजन पात्र, वाराणसी

साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का जून 2008 अंक मिला। हिन्दी साहित्य के चार शिखर दिग्गज साहित्यकारों जिसमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर' एवं बच्चनजी के जन्मशताब्दी वर्ष पर हिन्दीभाषी क्षेत्रों में उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर चर्चा करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर मुख्य पृष्ठ पर अंकित करना वास्तव में साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठाता का परिचय देना है। साहित्यकारों के प्रति जनमानस का जागरण परमावश्यक है, जिसका संकेत आपने सम्पादकीय में करके प्रकारान्तर से श्रद्धांजलि दी है। पुस्तकों की महत्ता, हिन्दी भाषा-साहित्य का अध्ययन, समवेदना के पत्र, काशी के सशक्त हस्ताक्षर, अत्र-तत्र सर्वत्र, शिक्षाशास्त्र की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें आदि के साथ सम्मान पुरस्कार की यथाप्रसंग चर्चा भी की गई है जो प्रासंगिक है।

स्मृति शेष में पं० किशन महाराज, डॉ० इन्दु जैन, डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी, निर्मला देशपांडे, विदोही, डॉ० राधेश्याम द्विवेदी के निधन पर श्रद्धांजलि-भावांजलि देना भी साहित्यिक दायित्व निर्वहन करना है। संगोष्ठी-लोकार्पण की विवेचना के साथ-साथ 'समय संवाद' शीर्षक से आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी पर अनेकानेक साहित्यकारों की टिप्पणियों का प्रकाशन भी वैचारिक क्रान्ति का स्पंदन है। पत्रिका पठनीय एवं अंक संग्रहणीय है।

— डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

(शेष पृष्ठ 15 पर)

संगोष्ठी/लोकार्पण

15वीं भाऊराव देवरस स्मृति-व्याख्यानमाला सम्पन्न

आज हमारे जीवन का निर्धारण बाजार एवं सत्ता करती है। हिमालय का केन्द्र मानसरोवर है। भारत की सीमाएँ दूर-दूर तक फैली हुईं थी। भारत के 56 अंग थे। 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नारा फिरंगियों को भगाने के लिए 10 देश भारत से जुड़े थे। आज का 'इण्डिया' इसका समाज हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान से बना है। हमारी पहचान भारतीय के रूप में ही होगी। आज हमारे देश में अनेक समस्याएँ हैं जिसके कारण हमारा राष्ट्र एवं जनजीवन असुरक्षित है। नक्सलवाद, माओवाद एवं इस्लामिक आतंकवाद हमें निरन्तर घायल कर रहा है। इससे भारत का विकास (मानसिक, भौतिक एवं बौद्धिक रूप से) बाधित हो रहा है। ये लोग अनगिनत लोगों को मौत की नींद सुला देते हैं। हम सभी इसी कारण भयभीत हैं।

आज नशीले पदार्थों का आदान-प्रदान, हथियारों एवं घुसपैठ जारी है। इसके कारण जीवन मूल्यों पर प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। इसी के कारण देश में गरीबी, भ्रष्टाचार, भुखमरी, बेरोजगारी के कारण अपराध व नशा बढ़ रहा है। यह विचार भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा 'भारतीय समाज वर्तमान चुनौतियाँ आन्तरिक सुरक्षा' विषय पर आयोजित 15वीं व्याख्यानमाला पर विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए **मा० इन्द्रेशकुमारजी** ने व्यक्त किया।

व्याख्यानमाला को सम्बोधित करते हुए उत्तर प्रदेश एवं असम के पूर्व पुलिस महानिदेशक **मा० प्रकाश सिंह** ने कहा कि आज हमारा समाज अन्दर से खोखला हो गया है। आज देशभक्ति और राष्ट्रीयता साम्प्रदायिकता के प्रतीक बन गये हैं। आज, आगे क्या होगा हमें सोचना होगा। हिन्दू राष्ट्र चिन्तन नहीं करते हैं, हम इसके प्रति सतर्क नहीं हैं। मलेशिया में 150 मन्दिर तोड़े गये। सारा देश चुप रहा। सारे हिन्दू कुछ नहीं बोले। ये क्या हो रहा है? चारों ओर सन्नाटा छाया रहा। मलेशिया में हिन्दुओं पर अत्याचार होते रहते हैं। मूर्तियाँ तोड़ी गयीं। इतने पर भी हम शान्त हैं। हमारी इतनी दुर्दशा क्यों है?

लेफ्टिनेंट जनरल निरंजन सिंह मलिक ने कहा कि आज युवा वर्ग को उठकर खड़ा होना होगा। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा हमारा मुख्य विषय है।

पाँच कहानियों की रंगमंचीय प्रस्तुति

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ने अपने विशेष कार्यक्रम के तहत हिन्दी की पाँच श्रेष्ठ कहानियों का सफल मंचन किया जो प्रबुद्ध दर्शकों के बीच आकर्षण का केन्द्र रहा। उक्त मंचन की प्रेक्षकों में पर्याप्त चर्चा और सराहना रही। मंचन के लिए चुनी गयी कहानियाँ थीं—यशपाल की 'परदा', उषा प्रियंवदा की 'अकेली राह', मिथिलेश्वर की 'बाबूजी', असगर वजाहत की 'अपनी-अपनी पत्नियों का सांस्कृतिक विकास' तथा गंगाप्रसाद विमल की 'इन्तजार में घटना'।

एन०एस०डी० के इस आयोजन का एक बड़ा आकर्षण यह रहा कि लगातार छह दिनों तक हर शाम पाँचों कहानियों का मंचन होता रहा। दर्शकों की रुचि के तहत दो दिन दोपहर में भी अतिरिक्त मंचन हुआ। हर दिन एक साथ पाँच कहानियों के मंचन की अभिनव प्रस्तुति।

प्रकाशन को उद्योग का दर्जा दें

पूर्वांचल पुस्तक व्यवसायी परिषद के एक दिवसीय प्रथम अधिवेशन का आयोजन रविवार को चौकाघाट स्थित सांस्कृतिक संकुल में किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता उमाशंकर सिंह (विश्वनाथ प्रकाशन, वाराणसी) तथा मुख्य अतिथि कौशलेन्द्र सिंह थे। विशिष्ट अतिथि ओपी त्रिपाठी (अध्यक्ष राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद) ने किया। इस दौरान जहाँ सात प्रतिष्ठित प्रकाशकों को अंगवस्त्रम् स्मृति चिह्न और सम्मान फलक देकर सम्मानित किया गया वहीं अपने व्यवसाय को सर्वोच्चता के शिखर पर ले जाने वाले वयोवृद्ध 43 पुस्तक विक्रेताओं को सम्मानित किया गया। अधिवेशन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि कौशलेन्द्र सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। तत्पश्चात् पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वन्दना पेश किया। डॉक्टर शिवप्रसाद शर्मा अम्बु ने शंकर वन्दना पेश किया। इस दौरान मुख्य अतिथि **कौशलेन्द्र सिंह** ने कहा कि पुस्तक व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है जो समाज को पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्रदत्त कर जीवन को बुलंदियों पर पहुँचाता है। इसलिए इस व्यवसाय को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि **ओपी त्रिपाठी** ने कहा कि जीवन में पुस्तकों का सबसे ज्यादा महत्त्व है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख प्रकाशक **उमाशंकर सिंह** ने कहा कि पुस्तकें राष्ट्र के युवाओं का मार्गदर्शन कर उनके व्यक्तित्व का निर्माण करती है और कुशल, अनुशासित नागरिक बनाकर राष्ट्रसेवा का अवसर प्रदान करती हैं। दूसरे सत्र में प्रकाशन को उद्योग का दर्जा देने की भारत सरकार से माँग की गई। इस दौरान सस्ती पुस्तकें प्रकाशकों को उपलब्ध कराने में प्रकाशकों से सहयोग देने की माँग की गई। इस दौरान रविशंकर सिंह द्वारा सम्पादित स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम में घनश्याम जायसवाल, राकेश जैन, अजय रस्तोगी, विपिन रस्तोगी, प्रेमचन्द जैन, सतीश अग्रवाल, अनुराग मोदी, अशोक अग्रवाल, मनोज बाठला, मुकुल अग्रवाल, उमेश भार्गव, संदीप गुप्ता आदि मौजूद थे।

भाषाई समाचार पत्र का दो दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न

देहरादून, भाषाई समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व और पश्चात जो अलख जगाई है वह सदियों तक प्रेरणादायी रहेगी। भाषाई समाचार पत्र भले ही आज कमजोर स्थिति में हों पर इनकी विस्तृत प्रचार क्षमता को कम करके नहीं आंका जा सकता। इन समाचार पत्रों को एक मंच देने की पहल भाषाई समाचार पत्र सम्मेलन के माध्यम से की जा रही है। यह मंच इन समाचार पत्रों के प्रोत्साहन का एक महत्त्वपूर्ण आधार बनेगा। यह मानना है कि भाषाई समाचार पत्र सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक ओंकार भावे का।

उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक ने भाषाई समाचार पत्रों को ताकत देने की माँग की। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण और बाजारीकरण के इस दौर में विचारों की स्वतंत्रता के साथ-साथ निष्पक्षता भी होनी चाहिए। समाचार पर विचार और विचार पर समाचार न थोपे जायें।

द्वितीय सत्र में पत्रकारिता विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के सन्दर्भ में भाषाई समाचार पत्रों की भूमिका' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० कुलदीप अग्निहोत्री ने विषय प्रस्तुत किया। डॉ० अग्निहोत्री का मानना था कि स्वतंत्रता पूर्व से लेकर अब तक भाषाई समाचार पत्रों की भूमिका विशेष महत्त्वपूर्ण है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने हिन्दी को सर्वोपरि भाषा बताते हुए कहा कि अकेले हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सबसे समृद्ध एवं ताकतवर है। भाषाई समाचार पत्रों के प्रकाशकों का आह्वान करते हुए कहा कि उसे अंग्रेजी अखबारों के स्वयं को राष्ट्रीय पत्र या समाचार माध्यम समझने के भ्रम को तोड़ने के लिए अपना नामकरण राष्ट्रभाषाई समाचार पत्र सम्मेलन और सभी भारतीय भाषाओं को स्वयं को राष्ट्रभाषा घोषित करके चलना चाहिए क्योंकि विकल्पहीनता में भी अंग्रेजी स्वयं को राष्ट्रभाषा की कुर्सी पर बिठा चुकी है।

राजभाषा साधन सी०डी० का विमोचन

कोयंबतूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव डॉ० सी० जयशंकर बाबु द्वारा संकलित एवं प्रस्तुत 'राजभाषा साधन' कम्पैक्ट डिस्क का विमोचन राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चिन के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ० वी० बालकृष्णन द्वारा दिनांक 22 मई 2008 को कोयंबतूर में आयोजित नराकास की अर्द्धवार्षिक बैठक के अवसर पर किया गया। इस सी०डी० में राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिन्दी ज्ञानवर्द्धन में उपयोगी साधनों का संकलन किया

गया है। विमोचन के पश्चात् अपने वक्तव्य में **डॉ० बालकृष्णन** ने कहा कि कोयंबतूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का यह एक अनूठा प्रयास है। समिति के अध्यक्ष **श्री के० श्रीनिवासन** ने कहा कि कोयंबतूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपनी विशिष्ट गतिविधियों से एक संस्थान का रूप ले लिया है। उन्होंने नरकास के सदस्य कार्यालयों से अपील की कि इस सी०डी० का सही रूप में उपयोग करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति हासिल करने का प्रयास किया जाय। सी०डी० के सम्बन्ध में अपने वक्तव्य में **डॉ० सी० जय शंकर बाबु** ने कहा कि सूचना-प्रौद्योगिकी ने आज हमारे जीवन के समस्त पहलुओं को प्रभावित किया है। भाषाओं के विकास की दिशा में यह वरदान साबित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों का ध्यान भाषाओं की ओर भी आकृष्ट हुआ है। परिणामत: भाषाओं के विकास में उपयोगी कई उपकरण इनके द्वारा विकसित किए गए हैं। सी०डी० की विषय-वस्तु के सम्बन्ध में विस्तृत प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उपयोगी महत्त्वपूर्ण जानकारी, राजभाषा विभाग द्वारा जारी नियम पुस्तकें, वार्षिक कार्यक्रम, हिन्दी भाषा एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण कैलेण्डर, महत्त्वपूर्ण परिपत्र, संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली, हिन्दी व्याकरण ई-पुस्तक, कई उपयोगी प्रपत्र, ई-पत्रिका 'कोंगु निधि', शब्दकोश और उपयोगी साफ्टवेयर उपकरणों की कड़िया आदि भी इसमें शामिल की गई हैं। इनके अलावा हिन्दी के सम्बन्ध में कुछ लेख भी हैं जिसमें एक लेख के माध्यम से हिन्दी के लिए यूनिकोड का उपयोग करने हेतु प्रेरित भी किया गया है। इस सी०डी० का वितरण नराकास, कोयंबतूर के सभी सदस्य-कार्यालयों के बीच किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य में एक महत्त्वपूर्ण साधन एवं उपकरणों के संकलन के रूप में यह कम्पैक्ट डिस्क कारगर सिद्ध होगा।

भारतीय भाषाओं की समिति को आज भी संघर्ष करना पड़ रहा है

देश की सबसे पुरानी भारतीय भाषाओं की संवाद समिति का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव आज जे०के० इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड फिजिक्स, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एस०एन० घोष आडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हिन्दुस्थान समाचार के फीचर सम्पादक और हिमाचल विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक डॉ० कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने कहा कि हिन्दुस्थान समाचार एकमात्र ऐसी संवाद समिति है जिसका गठन सहकारिता के क्षेत्र में हुआ है। यह अजीब स्थिति है कि सौ करोड़ से भी ज्यादा आबादी के देश में भारतीय भाषाओं की समिति को संघर्ष करना पड़ रहा है। देश की उन्नति में सूचना, समाचार और उनके स्रोत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से इस क्षेत्र में विदेशी संवाद समितियों का कब्जा है या फिर विदेशी भाषाओं का कब्जा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का युग है।

भारत को यदि प्रगति करनी है तो उसे भारतीय भाषाओं के सहारे ही आगे बढ़ना होगा। विदेशी समाचार स्रोतों के माध्यम से इण्डिया तो तरक्की कर सकता है लेकिन भारत तरक्की नहीं कर सकता। इस देश की मूल आत्मा भारत में बसती है। मीडिया तो विदेशी साम्राज्यवाद द्वारा दी गई कृत्रिम काया है। जिसे लोग भारत समझने की भूल करते हैं।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव ने कहा कि आज अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से अंध आधुनिकता को बढ़ावा मिल रहा है। हिन्दुस्थान समाचार भारतीय भाषाओं को महत्त्व देकर भारतीयता को बढ़ावा दे रहा है। वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद मिश्र ने कहा कि संवाद समिति लोकतंत्र का चौथा आयाम है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भरतजी अग्रवाल ने सभी का धन्यवाद करते हुए आशा जतायी कि प्रयागराज हिन्दी साहित्य का केन्द्र रहा है और आज जब भारतीय भाषाओं को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है, उसमें प्रयाग की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। हिन्दुस्थान समाचार के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर एक स्मारिका का विमोचन इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव ने किया।

भाषा के परिमार्जन में पंत का विशेष योगदान

छायावाद के शीर्षस्थ कवि सुमित्रानंदन पंत के 109वें जन्मदिन पर महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, रामगढ़ (नैनीताल) में गत दिवस (20 मई, 2008) उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता समकालीन हिन्दी कविता के चर्चित कवि तथा बीबीसी की हिन्दी सेवा में प्रोड्यूसर रहे नीलाभ ने पंत को जीवन की अंतरंग गहराईयों से जुड़ा कवि बताया। उन्होंने कहा कि भाषा के परिमार्जन में पंत का विशेष योगदान है। नीलाभ ने पंतजी से जुड़े अनेक संस्मरण सुनाए। अपनी कविता संग्रह 'अपने आप से लम्बी बातचीत' की भूमिका स्वयं सुमित्रानंदन पंत ने लिखी थी।

उन्होंने कहा कि जब पंतजी 18-19 बरस के थे, तब उनकी पहली कविता छपी थी। एक 18 साल का युवक जो कौसानी जैसे दुर्गम स्थान से निकलकर अल्मोड़ा और फिर इलाहाबाद पहुँचता है और वहाँ यह तय करता है कि मैं हिन्दी में ही कविता लिखूँगा। पंतजी ने लिखा है कि हमको ब्रजभाषा की जीर्ण-शीर्ण चोली नहीं चाहिए, इससे हमारा काम नहीं चलेगा। हमको तो अब नया लिबास, नया कपड़ा चाहिए। हमको ये नया कपड़ा हिन्दी में ही मिलेगा। 1918 में यह कहना बड़ी बात है। 1940 में उन्होंने कविता लिखी थी 'भारतमाता'। इसमें हमारे देश की तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक स्थितियों का चित्रण है। इस कविता की एक पंक्ति है 'धूल भरा मैला-सा आँचल....।' 'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु का प्रसिद्ध उपन्यास है। 'मैला आँचल' शीर्षक रेणु ने इसी कविता से लिया है।

उन्होंने कहा कि आज हिन्दी साहित्य का जो माहौल है, वह बहुत अच्छा नहीं है। हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि हमें महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत जैसे प्रथम पंक्ति के साहित्यकारों का सान्निध्य मिला। आजकल तो बड़े लेखक नए लेखकों की रचनाएँ पढ़ते ही नहीं हैं लेकिन ये बड़े लोग ऐसे थे जो नए लिखने वालों को हमेशा प्रोत्साहित करते थे, यह बड़ी बात है।

कार्यक्रम में पूर्व विदेश सचिव शशांक, महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक बटरोही, शोध अधिकारी मोहन सिंह रावत, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल परिसर की हिन्दी विभागाध्यक्ष नीरजा टण्डन आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन युवा कवि शिरीष मौर्य ने किया।

'संतों एवं सूफी कवियों की सांस्कृतिक चेतना' पर परिचर्चा-गोष्ठी सम्पन्न

कामकी, 18 मई। अरुणाचल प्रदेश के दोन्यी पोलो शासकीय महाविद्यालय में डॉ० अरुण कुमार पाण्डेय की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'संतों एवं सूफी कवियों की सांस्कृतिक चेतना' पर परिचर्चा-गोष्ठी आयोजित हुई; जिसमें भाग लेते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० हरीशकुमार शर्मा, रीडर एवं भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ० शिवानन्द झा, डी०एस० कुण्डू तथा आका ताना तारा आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रमुख वक्तव्य राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय ने दूरभाष पर दिया। उन्होंने कहा कि संतों और सूफियों में समानता के तमाम बिन्दुओं के बावजूद बहुत सारे तत्व ऐसे हैं जो उनको अलग करते हैं। इसलिए संत होने पर भी सूफी, सूफी हैं और संत, संत। उनके अध्ययन-मनन की अलग परम्परा हिन्दी साहित्य में स्थापित है।

'भारतीय भाषाओं का भविष्य' पर संगोष्ठी

नई दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर में सम्यक् फाउण्डेशन द्वारा दिल्ली सरकार, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज तथा गौड़संस इण्डिया लि० के तत्वावधान में 'भारतीय भाषाओं का भविष्य' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें उद्घाटन वक्तव्य दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती शीला दीक्षित ने तथा बीज वक्तव्य पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय के प्रो० सुरेन्द्र गम्भीर ने प्रस्तुत किया, अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि तथा केन्द्रीय ललित कला अकादमी के अध्यक्ष श्री अशोक वाजपेयी ने की। प्रसिद्ध भाषाविद् श्री विजय मल्होत्रा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव ने भारतीय भाषा अभियान की भूमिका प्रस्तुत की। इस चिंतनपरक गोष्ठी में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख लोगों ने भाग लिया और भारतीय भाषाओं की अस्मिता और उसके प्रचार-प्रसार हेतु गम्भीर एवं व्यावहारिक कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

'विदेशों में हिन्दी शिक्षण' संगोष्ठी सम्पन्न

जयजयवंती संस्था की ओर से नई दिल्ली के इण्डिया हैबिटेट सेण्टर में जयजयवंती साहित्य संगोष्ठी की नवीं कड़ी 'विदेशों में हिन्दी शिक्षण' आयोजित की गई, जिसके मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल डॉ० भीष्मनारायण सिंह थे तथा अध्यक्षता पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय के प्रो० सुरेन्द्र गम्भीर ने की। कार्यक्रम में विदेश मंत्रालय की हिन्दी उपसचिव श्रीमती मधु गोस्वामी तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की प्रो० वशिनी शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवि० डॉ० रामदरश मिश्र को 'जयजयवंती सम्मान' से सम्मानित किया गया, जिसके अन्तर्गत ब्रज कला केन्द्र के सौजन्य से लैपटॉप कम्प्यूटर तथा हिन्दी सॉफ्टवेयर सॉल्यूशंस के सौजन्य से हिन्दी सॉफ्टवेयर प्रदान किए गए।

'उत्तरांचल की कहानियाँ' का विमोचन

गत दिनों मुम्बई में डॉ० राजेश्वर उनियाल द्वारा सम्पादित 'उत्तरांचल की कहानियाँ' का विमोचन भारत सरकार के पूर्व मंत्री श्री राम नाईक ने किया। उत्तरांचल सरकार में योजना आयोग के उपाध्यक्ष माननीय डॉ० मोहन सिंह रावतजी 'गाँववासी' विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

'हमारे क्रांतिकारी विचारक' का विमोचन

तिरुवनंतपुरम में आयोजित दूरसंचार विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में प्रसिद्ध कवि-साहित्यकार 'खनन भारती' के पूर्व सम्पादक एवं दूरसंचार विभाग की केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री राजेन्द्र पटोरिया की पुस्तक 'हमारे क्रांतिकारी विचारक' का विमोचन माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री डॉ० शकील अहमद ने किया।

डॉ० जोशी की पुस्तक का विमोचन

भाजपा के पूर्व अध्यक्ष डॉ० मुरलीमनोहर जोशी के भाषणों के संकलन 'साइंस सस्टेनेबिलिटी एण्ड इण्डियन नेशनल रिसर्जेंस' का श्री सत्य साँईं बाबा इण्टरनेशनल सेण्टर, दिल्ली में विमोचन सम्पन्न हुआ।

श्री एम०जी०के० मेनन ने पुस्तक का विमोचन करते हुए मुरलीमनोहर जोशी को एक महान भौतिकशास्त्री बताया।

'शताब्दी के पाँच काले पन्ने' का विमोचन

जबलपुर में श्री अनिल माधव दवे द्वारा लिखित पुस्तक 'शताब्दी के पाँच काले पन्ने' पुस्तक का विमोचन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी के लिए यह पुस्तक पथ-प्रदर्शक होगी। श्री दवे ने कहा कि यह पुस्तक भारतीय मानस की भूलने की कमजोरी को ध्यान में रखकर लिखी गई है।

लोकार्पण एवं गोष्ठी सम्पन्न

गत दिनों भारतीय साहित्य परिषद् के तत्वावधान में मेरठ में आयोजित लोकार्पण समारोह में डॉ० शैल के सद्य: प्रकाशित गीत-कविता संग्रह 'हीरकनी मुस्कान' का लोकार्पण प्रसिद्ध गीतकार श्री भारत भूषण ने किया। अध्यक्षता की प्रो० वासुदेव शर्मा ने तथा संचालन का दायित्व निर्वाह किया कथाकार-आलोचक डॉ० सतीशराज पुष्करणा ने। इस अवसर पर डॉ० शैल प्रणीत गद्य-गीत संग्रह 'कुछ बिखरी-सिमटी यादें' का लोकार्पण प्रख्यात कवयित्री डॉ० सुधा गुप्ता ने किया।

'ॐ पूर्णमदः' का लोकार्पण सम्पन्न

दिल्ली। आचार्य यादकुमार वर्मा कृत 'ॐ पूर्णमदः' काव्य-ग्रन्थ का लोकार्पण भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष तथा संसद सदस्य डॉ० कर्ण सिंह ने किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मॉरीशस के राजदूत महामहिम मुखीश्वर चूनी ने लोकार्पित पुस्तक के सन्दर्भ में अपने देश में प्रचारित वैदिक साहित्य की चर्चा की।

वर्तमान समाज का संकट और कथा साहित्य

'वर्तमान समाज का संकट और कथा साहित्य' पर मेधाश्रम संस्था के तत्वावधान में प्रेस क्लब, कानपुर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरेण्य साहित्य सेवक वात्स्यायन ने कहा कि विगत समय में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तमाम घटनाएँ घटी हैं और साहित्य इनसे अछूता नहीं रह सकता है। युवा साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि भूमण्डलीकरण एवं उपभोक्तावाद के इस दौर में साहित्य को संवेदना के उच्च स्तर को जीवन्त रखते हुए समकालीन समाज के विभिन्न अंतर्विरोधों को अपने आप में समेटकर देखना चाहिए। साहित्यकार के सत्य और समाज के सत्य को मानवीय संवेदना की गहराई से भी जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। 'पुनर्नवा' के संयोजक एवं कथाकार राजेन्द्र राव ने कहा कि कथा साहित्य पर आया संकट तात्कालिक है। प्रेमचंद के जमाने में भी साहित्य पर संकट आया था, लेकिन उसमें संवेदना खत्म नहीं हुई थी।

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

सोनुभाऊ बसवंत कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शहापुर के हिन्दी विभाग और महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में 'आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिक बोध' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। उद्घाटन सत्र में उद्घाटक के रूप में हिन्दी के प्रख्यात समीक्षक डॉ० शिवकुमार मिश्रजी उपस्थित थे। सत्र की अध्यक्षता मुम्बई विश्वविद्यालय की पार्वती व्यंकटेश जी ने की। हिन्दी की प्रख्यात कथा लेखिका सूर्यबाला, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष श्री नंदकिशोर नौटियाल जी इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रपत्र वाचकों में गोवा से आये डॉ० ए०पी० त्रिपाठी, उज्जैन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्र कुमार शर्मा, मुम्बई से डॉ० शशि मिश्र और डॉ० सतीश पाण्डेयजी उपस्थित थे।

यह संगोष्ठी तीन सत्रों में चली।

जलेस द्वारा 'भगत सिंह : व्यक्तित्व एवं विचार' पर संगोष्ठी आयोजित

जनवादी लेखक संघ दार्जिलिंग जिला समिति द्वारा मिश्र सम्मेलिनी में भगत सिंह के व्यक्तित्व एवं विचारों को केन्द्रित करके सेमिनार तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। सेमिनार सत्र में जलेस जिला अध्यक्ष दिलीप सिंह, सचिव ओमप्रकाश पाण्डेय, साहित्यकार महेन्द्र सिंह पुनिया, डॉ० दिलीप सरकार, डॉ० पार्थ सारथी दास, जी०एस० होश, गणेश त्रिपाठी, नंद दुला देवनाथ, डॉ० अरुण होता, डॉ० मनीषा झा तथा मुन्नालाल प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि साम्राज्यवादी वैश्वीकरण और देशी-विदेशी पूँजीपतियों के लूट-खसोट के इस भयानक दौर में भगत सिंह के विचार काफी प्रासंगिक हो गये हैं। विशेष रूप से धार्मिक अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता, जातीय आतंकवाद, देशी शासक वर्ग के चरित्र तथा जनता की मुक्ति के लिए क्रान्तिकारी पार्टी के निर्माण को लेकर भगतसिंह के विचार पूर्णत: प्रेरक तथा सार्थक हैं। भगत सिंह के विचार आज भी

प्रासंगिक हैं, उनके विचारों को जानना, आत्मसात् करना तथा क्रान्तिकारी वर्गों की भूमिका को रेखांकित करना जरूरी है।

28वें अस्मितादर्श साहित्य सम्मेलन का आयोजन

अस्मितादर्श साहित्य सम्मेलन का आयोजन अम्बेडकरीय साहित्य प्रबोधिनी, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) में सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय इस सम्मेलन का उद्घाटन राज्य साहित्य संस्कृति मंडल, महाराष्ट्र के अध्यक्ष पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक ने किया। सुप्रसिद्ध दलित साहित्यकार ओम प्रकाश वाल्मीकि ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं अस्मितादर्श पत्रिका के सम्पादक गंगाधर पांतावणे ने अस्मितादर्श साहित्य सम्मेलन के आयोजनों की सफलता पर प्रकाश डाला और कहा कि ''डॉ० अम्बेडकर विचार से प्रेरित यह आन्दोलन सबका आह्वान करता है।''

इस अवसर पर अनेक साहित्यकारों को, रोहन नागदिवे (स्थितिचा ओला कोलाज-कविता संग्रह), महेंद्रा सुके (अथांतर-नाटक), विवेक (कहानी-संग्रह), प्रा० यादव गायकवाड़ (बौद्ध धम्माची नवी फसल-वैचारिकी), यशोधरा (माझी मी-आत्मकथा), शरण कुमार लिम्बाले (बहुजन-उपन्यास), मुकेश वाल्के (अनुराग-कविता संग्रह), डॉ० मच्छिंद्र चोरमारे (तापलेले दिवस-कविता संग्रह) को अस्मितादर्श साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

'मॉरीशस में हिन्दी की वैश्विक स्थिति और नागरी लिपि' पर संगोष्ठी

हिन्दी के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार और इसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में संवर्धित करने के उद्देश्य से भारत और मॉरीशस के सहयोग से स्थापित 'विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरीशस' द्वारा विगत दिनों एक भव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'हिन्दी की वैश्विक स्थिति और नागरी लिपि'।

इन्दिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, मॉरीशस के विशाल सभागार में आयोजित समारोह का उद्घाटन मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय धरम गोकुलजी ने किया। उन्होंने बताया कि मॉरीशस में हिन्दी शिक्षा की व्यवस्था प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक है। यहाँ हिन्दी को पूर्णत: बढ़ावा दिया जाता है। यहाँ दो विश्व हिन्दी सम्मेलन भी हो चुके हैं।

भारत से आमंत्रित डॉ० परमानन्द पांचाल ने हिन्दी के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार में मॉरीशस की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मॉरीशस सरकार की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मॉरीशस में हिन्दी तो है और यहाँ अधिकांश लोग हिन्दी जानते हैं किन्तु हिन्दी दिखाई नहीं देती। सार्वजनिक स्थानों पर सर्वत्र फ्रेंच और अंग्रेजी के ही बोर्ड दिखाई देते हैं। यदि इनके साथ ही हिन्दी के भी कुछ साईनबोर्ड लगाए जाएँ तो इससे हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ेगी।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में, डॉ० परमानन्द पांचाल ने नागरी लिपि के इतिहास, उसकी वैज्ञानिकता और उसके ध्वन्यात्मक गुणों पर विस्तार से प्रकाश डाला और अन्य लिपियों की तुलना में नागरी लिपि की श्रेष्ठता को पावर प्वाइंट की सहायता से सचित्र रूप में प्रदर्शित किया। अगले सत्र की अध्यक्षता डॉ० उदयनारायण गंगू ने की। मॉरीशस के कई विद्वानों और प्राध्यापकों ने भी अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में आयोजित विचार गोष्ठी

भोपाल, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में आयोजित विचार गोष्ठी में हिन्दी भाषा और साहित्य पर वरिष्ठ कवि भगवत रावत, हिन्दीसेवी कैलाशचन्द्र पंत, कला समीक्षक विनय उपाध्याय, लेखक डॉ० जवाहर कर्नावट, आलोचक युगेश ने मंतव्य प्रकट किए। कैलाशचन्द्र पंत का कहना था कि यदि हम शुद्ध हिन्दी या शत-प्रतिशत रूप में हिन्दी के प्रयोग न किये जाने और उसमें अंग्रेजी या चालू भाषा के प्रयोग को लेकर चिंतित हैं, तो हमें दूसरी ओर हिन्दी के विश्व स्तर पर प्रयुक्त होने पर संतुष्ट होना चाहिए। आज बाजारवाद और भूमंडलीकरण से उपजे सभ्यताओं के संघर्ष में हिन्दी को 'वसुधैव कुटुंबकम्' के रूप में विश्व मानवता को मनवाने के सौभाग्यशाली संस्कार प्राप्त हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय : राष्ट्रीय सेमिनार

21वीं शती का हिन्दी साहित्य और वैश्वीकरण

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में '21वीं शती का हिन्दी साहित्य और वैश्वीकरण' विषय पर दो दिनी राष्ट्रीय सेमिनार विभाग के सह आचार्य डॉ० अनिल जैन के संयोजन में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाशिल्पी डॉ० हेतु भारद्वाज ने की। मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० अजय तिवारी ने बीज वक्तव्य दिया और विशेष अतिथि थीं, राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष प्रो० पवन सुराणा, जिन्होंने भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में सांस्कृतिक विचलन की समस्या पर चिन्ता जताते हुए शैक्षणिक पाठ्यक्रम में संस्कृति को समायोजित करने पर बल दिया। बाद के सत्रों में 'भूमण्डलीकरण और सांस्कृतिक बहुलतावाद', 'भूमण्डलीकरण की अवधारणा' आदि विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किये गये।

'स्वयं' और कल्पांत के 'राही' विशेषांक लोकार्पित

आधुनिक हिन्दी कविता पर लय और छंद-हीन होने का आरोप लगता रहा है जिसका जवाब है, पुष्पा राही के गीत और गज़ल। दिल्ली स्थित हिन्दी भवन में पुष्पा राही के नये काव्य संकलन 'स्वयं' और कल्पांत पत्रिका के राही विशेषांक के लोकार्पण के अवसर पर गीत, गज़ल, कविता में लय, छन्द आदि पर विचार सामने आये। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० रामदरश मिश्र ने की। आयोजन कल्पांत, अक्षरम् और अनुभव प्रकाशन द्वारा किया गया।

मीडिया और विकास

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा 'मीडिया एवं विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। उद्घाटन वक्तव्य में 'अमर उजाला' समूह सम्पादक शशिशेखर ने कहा, ''मीडिया को गलत बातें प्रकाशित करने से बचने के साथ ही खामियों को सही ढंग से प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी लेनी होगी। तभी मीडिया विकास में अपनी भूमिका निभा पाएगा।''

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो० बी०के० कुठियाला ने कहा, ''पश्चिमी देशों ने विकास का जो पैमाना तय किया है, वह भारत के सन्दर्भ में ठीक नहीं है।'' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० लक्ष्मण चतुर्वेदी ने कहा, 'लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ में इतनी ताकत है कि वह समाज एवं देश में सकारात्मक माहौल बनाए।' माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने मीडिया के विकास पर और प्रकाश डाला। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति सच्चिदानंद जोशी ने पत्रकारों, शिक्षकों और छात्रों को जागृत होने पर जोर दिया। कुलसचिव डॉ० डी०एन० वर्मा ने आभार प्रकट किया।

'कवि ने कहा' लोकार्पण

किताबघर प्रकाशन ने वर्तमान समय के दस महत्त्वपूर्ण कवियों की चुनी हुई रचनाओं को 'कवि ने कहा' शृंखला में प्रकाशित किया है। लोकार्पण समारोह में रचनाकारों के साथ वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह, अशोक वाजपेयी, कवि कुँवर नारायण और केदारनाथ सिंह शामिल हुए। नामवर सिंह ने कहा, ''साहित्य के प्रति लोगों में रुचि बढ़ाने की दिशा में किताबघर का प्रयास सराहनीय है।'' अशोक वाजपेयी ने कहा, ''मैंने पहली बार ऐसा विशिष्ट प्रकाशन एक साथ देखा है। लोग साहित्य से विमुख हो रहे होते तो प्रकाशक प्रयोगधर्मिता का प्रयास नहीं करते।''

किताबघर के निदेशक सत्यव्रत ने कहा, ''हमारे संस्थान ने पूर्व में प्रकाशित 'मेरे साक्षात्कार' और 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' शृंखला की तर्ज पर 'कवि ने कहा' शृंखला प्रकाशित की है। अनामिका, उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल, मदन कश्यप, लीलाधर जगूड़ी, लीलाधर मंडलोई, विजयेंद्र, विष्णु नागर और ऋतुराज के काव्य-संग्रह प्रकाशित किए गए हैं।''

रॉबिन शा पुष्प की दो पुस्तकों का विमोचन

संस्कार भारती द्वारा आयोजित एक समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार रॉबिन शॉ पुष्प की दो पुस्तकों 'अलग-अलग अहसास' और 'यहाँ चाहने से क्या होता है' का विमोचन डॉ० ए०के० ठाकुर ने किया। डॉ० शान्ति जैन ने पुस्तकों का परिचय देते हुए बताया कि उनका लेखन पाठकों को संसार का साक्षात्कार कराता है।

लोक संस्कृति पर बाजारवाद के हमले से रहें सावधान

लोक साहित्य ने समृद्ध किया हिन्दी साहित्य

उत्तराखण्ड का लोक साहित्य एवं हिन्दी की मुख्यधारा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए पर्यटन मंत्री प्रकाश पंत ने कहा कि आज वैश्वीकरण का दौर है। लेकिन ऐसे समय में हमें अपने लोक को समझना होगा। हमारी सारी जीवन प्रक्रिया हमारे लोक में है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रो० डीडी शर्मा ने उत्तराखण्ड के लोक साहित्यकारों का उल्लेख करते हुए उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक इतिहास पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। डॉ० प्रयाग जोशी ने सीमांत, जनजाति और यहाँ के लोकसाहित्य, लोकसमाज, संस्कृति पर विचार रखे। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ० राम सुधार सिंह ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार आनन्द बल्लभ उप्रेती के कहानी-संग्रह 'घोंसला' का भी विमोचन किया गया।

एमटीआई में 'उत्तराखण्ड का लोक साहित्य एवं हिन्दी की मुख्यधारा' विषयक संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रो० आरसी पंत की अध्यक्षता और प्रो० राम सिंह के मुख्य आतिथ्य में संगोष्ठी का समापन हुआ। वरिष्ठ पत्रकार आनन्द बल्ला उप्रेती ने लोक संस्कृति पर हो रहे बाजारवाद के हमले को घातक बताते हुए सजग रहने का आह्वान किया। डॉ० प्रयाग जोशी ने उम्मीद जताई कि इस प्रकार के आयोजनों से उत्तराखण्ड के समृद्ध इतिहास को हिन्दी की मुख्यधारा से जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि पण्डित नैन सिंह रावत और पण्डित गुमानी को हिन्दी के इतिहास में जगह मिलनी चाहिए। जुगल किशोर पेटशाली ने जीवन दर्शन की झाँकी को लोक साहित्य की आत्मा बताया। मनु ढौडियाल ने लोक पर उपभोक्तावादी प्रभाव की चर्चा की। जेएनयू के ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि लोक परम्पराओं और मान्यताओं को अपने भीतर आत्मसात करता है। डॉ० ताराचंद्र त्रिपाठी ने उत्तराखण्ड के साहित्यकारों की विस्तृत भूमिका पर प्रकाश डाला। गिरीश तिवारी गिर्दा ने गीत के माध्यम से कहा कि प्रतिशोध से ही अभिव्यक्ति की शुरुआत होती है। शेरदा अनपढ़ और अलगोजा वादक लालसिंह रावत ने अपनी कर्णप्रिय प्रस्तुति दी। डॉ० दिनेश व्यास ने स्लाइड शो द्वारा धारचूला एवं व्यास घाटी के जन-जीवन एवं त्योहारों पर महत्त्वपूर्ण और रोचक जानकारी दी। इससे पूर्व संयोजक वाराणसी के डॉ० देवेन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए परिचय दिया।

आज भी प्रासंगिक हैं महादेवी वर्मा

वाराणसी नाट्य परिषद के तत्वावधान में नाटी इमली स्थित परिषद के संस्थान में महादेवी वर्मा का जन्मशती समारोह मनाया गया। प्रमुख वक्ता राम कुँवर राय ने कहा कि महादेवी वेदना की प्रतिमूर्ति हैं। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

डॉ० बृजबाला ने महादेवी वर्मा के संस्मरण सुनाए। रामअवतार पाण्डेय, जितेन्द्रनाथ मिश्र ने साहित्य में महादेवी वर्मा के योगदान को रेखांकित किया।

गीत शाश्वत है

मूर्धन्य गीतकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र ने कहा कि गीत शाश्वत और निरन्तर है। वह जीवन है, प्रकाश है, अन्तर का नाद है। वे मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक गीत गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। इस अवसर पर आपने अपना मधुर गीत 'एक बार जाल और फेंक रे मछेरे' का पाठ कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। गोष्ठी की अध्यक्षता बटुक चतुर्वेदी ने की।

विशेष अतिथि एल०एन०सी०टी० के चेयरमैन श्री जयनारायण चौकसे ने कहा—''वर्षों से मध्यप्रदेश लेखक संघ लेखक भवन के लिये प्रयत्नशील था, मैं घोषित करता हूँ कि मैं लेखक भवन के लिये भूमि दूँगा।'' इतना सुनते ही नरेश मेहता गोष्ठी कक्ष, करतल ध्वनि से गूँज उठा। गोष्ठी में संस्था के उपाध्यक्षद्वय सहित अनेक साहित्यकार उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन गीतकार दिवाकर वर्मा ने किया।

भारत पेट्रोलियम संस्थान में 21वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ० मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने कहा कि किसी कार्य को प्रारम्भ करना जितना सरल है, उसके स्तर को अन्त तक गुणवत्ता बनाए रखना उतना ही कठिन व चुनौतीपूर्ण है। राजभाषा अनुभाग अबाध गति से हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन कर इस चुनौती पर खरा उतर रहा है, यह प्रशंसा की बात है। उन्होंने कहा कि विज्ञान व विचारों के सम्प्रेषण के लिए अपनी भाषा का प्रयोग जरूरी है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि प्रयोगशाला की चहारदीवारी से बाहर बहुपयोगी ज्ञान-विज्ञान तथा महत्त्वपूर्ण अनुसन्धानों को जन-जन तथा वृहद समाज तक पहुँचाने में उत्प्रेरक का कार्य करती है भाषा। हिन्दी में वह सर्वग्राह्यता व सम्प्रेषणीयता का गुण मौजूद है कि वह विज्ञान के जटिलतम विषयों को भी सहज तरीके से अभिव्यक्त करने में सक्षम है।

दुष्यंत कुमार स्मारक व्याख्यानमाला

भोपाल। भारतीय संस्कृति न तो व्यक्तिवादी है और न समूहवादी। हमारी संस्कृति तो व्यक्तित्ववादी है परन्तु पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर हमारा समाज व्यक्तिवाद पर केन्द्रित होता जा रहा है और यही वजह है कि आज हमारे चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है, और व्यक्ति स्वार्थी होता जा रहा है। ये विचार दुष्यंतकुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० बलदेव वंशी ने व्यक्त किए।

दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय द्वारा दुष्यंतकुमार के 75वें जन्म वर्ष पर व्याख्यान शृंखला का आयोजन किया गया। जिसकी दूसरी कड़ी के रूप में दुष्यंत संग्रहालय और साहित्य अकादमी दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० अच्युतानंद मिश्र की अध्यक्षता में डॉ० बलदेव वंशी, सुश्री अनुराधा शंकर सिंह, डॉ० मीनाक्षी जोशी एवं विजयकुमार देव ने 'ये सूरत बदलनी चाहिए' विषय पर व्याख्यान दिए।

उद्दण्डता से कमीनेपन तक

आलोचकप्रवर पं० रामचन्द्र शुक्ल काशी नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में तैयार किये जानेवाले 'हिन्दी शब्द सागर' के निर्माण में व्यस्त थे। सायंकाल जब वे दिन-भर के काम को समाप्त कर भ्रमण के लिए बाहर गए तो एक सज्जन ने उनसे पूछा—'कहिये, कैसी प्रगति हो रही है?' उनका अभिप्राय 'शब्द सागर' के लेखन से था।

शुक्लजी ने उत्तर दिया—''उद्दण्डता से शुरू कर कमीनेपन तक आए हैं।''

पूछनेवाले सज्जन झेंपे भी और शुक्लजी की हाज़िरजवाबी का भी लोहा मान गए।

—'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' से

पुस्तक परिचय

अब तो बात फैल गई
(यादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति)

कान्तिकुमार जैन

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 268

सजिल्द: रु० 250.00/ ISBN: 978-81-7124-586-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संस्मरण विधा का विस्तार

हाल के वर्षों में हिन्दी के जिन लेखकों ने गद्य की कुछ विधाओं—खासकर संस्मरण को परिभाषा की जकड़बंदी से मुक्ति दिलाई, उनमें रवीन्द्र कालिया और काशीनाथ सिंह के बाद कांतिकुमार जैन अन्यतम हैं। संस्मरण को कुछ लेखकों ने न केवल सात्विक और नैतिक विधा के लबादे से ढक दिया था, बल्कि इसे प्रात: स्मरणीयों, पूजनीयों और आराध्यों के पूजा-अर्चन और अभ्यर्थना से जुड़ा भी बना दिया था। जबकि किसी भी विधा की जीवंतता का सबसे बड़ा प्रमाण होता है कि वह दिवंगत और जीवित के संघर्ष की धड़कनों को ठीक से पकड़ सके। वैसे भी संस्मरण बेहद नाजुक और संवेदनशील विधा है, जिसमें जीवन के प्रसार की ज्यादा गुंजाइश है। इस विधा की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसके आधार पर साहित्येतिहास भी लिखा जा सकता है और किसी बड़े लेखक की जीवनी भी। चाहें तो इसमें उपन्यास भी समाहित कर सकते हैं।

'लौटकर आना नहीं होगा', 'तुम्हारा परसाई' और 'जो कहूँगा सच कहूँगा' के बाद '**अब तो बात फैल गई**' कांतिकुमार जैन के संस्मरणों की चौथी पुस्तक है। पुस्तक की किंचित लम्बी भूमिका में लेखक ने संस्मरण विधा की अब तक प्रचलित और रूढ़ हो गई आचार संहिता को चुनौती देते हुए संस्मरण के पाट को चौड़ा किया है। उनके संस्मरण के घेरे में सिर्फ समकालीन, अग्रज, पूर्वज, जीवित या दिवंगत ही नहीं बल्कि सुदूर के लोग भी होते हैं। वे लिखते हैं—''मैंने ऐसे लोगों को भी संस्मरणीय बनाने की जुगत खोज निकाली है। नजीर अकबराबादी से मैं कभी नहीं मिला, मिलना सम्भव ही नहीं था। उनकी मृत्यु आज से मुद्दत पहले हो चुकी थी पर नजीर मुझको अच्छे लगते हैं। वह कवियों का कवि भले न हो, पर आम आदमी का कवि तो वह हैं ही। उसकी मजार आगरे में है, उसका घर भी वहीं है। मैं उसके मुहल्ले में घूमा, उस मुहल्ले में रहने वालों से मिला, उनसे बातें कीं। उसका पूरा परिवेश मैंने अनुभव किया...। ताजमहल के पिछवाड़े को अपने संस्मरण में लपेटकर मैं नजीर को भी साक्षात कर पाया।''

कहने की जरूरत नहीं कि कांतिजी के भीतर एक साहित्यिक बेचैनी और प्रश्नाकुलता है उन साहित्यकारों के बारे में संस्मरणात्मकनुमा कुछ लिखने की, जिन्होंने उनकी जीवन दृष्टि को गहरे प्रभावित किया हो। कांतिजी की प्रस्तुत पुस्तक आकृति तो नहीं, लेकिन प्रकृति के हिसाब से पूर्व प्रकाशित पुस्तकों से थोड़ा हटकर है। पुस्तक के तीन खण्ड हैं—याद, विवाद और संवाद। यदि याद को 'वाद' से जोड़ दें तो यहाँ पूरा वाद-विवाद है यानी साहित्यिक रक्तपात की पूरी गुंजाइश है। 'बात बात में बात' तो यहाँ है ही, डंके की चोट पर बात फलने की घोषणा भी है। निडर, निर्भय, उन्मुक्त संस्मरणकार की लेखनी है यहाँ। उनका सच कहने का फैसला गर्वोक्ति नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति का कठोर संकल्प है, जिसका दायरा बड़ा है। संस्मरणों के केन्द्र में जो व्यक्ति होता है, साधारणतया में भी विलक्षण होता है—बिल्कुल त्रिलोचन की तरह। वे लिखते हैं—''पिछले आठ-दस वर्षों से संस्मरण लिखते-लिखते मुझे लगता है संस्मरण मेरी स्मृति में ही नहीं, धमनियों में भी प्रवाहित होने लगे हैं। मैं अब जो सोचता हूँ, संस्मरणात्मक हो जाता है।'' कितनी अच्छी स्वीकारोक्ति है यह। पुस्तक के 'याद' खण्ड पर लेखक ने कोई टिप्पणी नहीं की है। अलबत्ता पुस्तक के शीर्षक को मध्यकाल के सामंती संस्कारों को चुनौती देने वाली दुस्साहसी महिला कवयित्री मीराबाई के प्रति जरूर ऋण व्यक्त किया है। इस खण्ड में नज़ीर अकबराबादी को जिस तरह ताजमहल के पिछवाड़े के कवि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, वह पाठक के सामने आ जाते हैं, अपनी बोली-बानी शायरी और परिवेश के साथ। 'सुभद्राकुमारी चौहान : जेल तो मेरा मायका है' वस्तुत: कांतिजी के संस्मरण का प्रस्थान बिन्दु है। डॉ० हरी सिंह गौर (सागर विवि के संस्थापक), हरिशंकर परसाई और राजेन्द्र यादव पर लिखे गये संस्मरण इस खण्ड में संकलित हैं।

''पुस्तक का विवाद खण्ड नामानुरूप काफी विवादास्पद है। जब इस खण्ड के लेख यहाँ-वहाँ छपे तो मुझ पर बाण चलाये गये।'' मुझे नहीं लगता कि इस खण्ड के विवाद संस्मरण के लिए कोई चुनौती है। क्या ईसुरी, क्या मैत्रेयी पुष्पा और क्या सानिया मिर्जा का स्कर्ट। इस खण्ड में शिवकुमार मिश्र ने जो विवाद उठाये हैं, वह बेहद दिलचस्प हैं। अन्तिम खण्ड में सबसे दिलचस्प बातचीत युवा समीक्षक डॉ० साधना अग्रवाल से हैं, जिसका शीर्षक है 'विधाओं की कोई एलओसी नहीं होती।' वस्तुत: इस संवाद के कई प्रश्नों से कांतिजी के संस्मरण लेखन के कई दरवाजे खुलते हैं। वे महसूस करते हैं कि विधाओं का वर्गीकरण तो साहित्यशास्त्रियों ने सुविधा के लिए कर रखा है। विधाओं की चौहद्दी में बँधने से रचनाकारों की क्रियेटिविटी बाधित होती है। '**अब तो बात फैल गई**' पठनीय और शाब्दिक खिलवाड़ से भरी है, जो पाठकों को कहीं न कहीं गुदगुदाती है।

—भारत भारद्वाज

(*पृष्ठ 9 का शेष*)

आप जिस प्रकार अपने पूज्य पिताजी के पदचिह्नों पर चल रहे हैं उसे जानकर हृदय बहुत आह्लादित होता है।

स्वर्गीय पुरुषोत्तमजी ने जो कुछ काम किया है वह अपने आप में सचमुच एक सच्चे हिन्दी के सेवक का उदाहरण है। आप भी उसी प्रकार कर रहे हैं। 'भारतीय वाङ्मय' पहले पृष्ठ से अन्तिम तक पूरा पढ़ना पड़ता है। सभी सामग्री बहुत उपयोगी हैं।

भगवान आपको शक्ति दें।

सस्नेह,

— दीनानाथ मल्होत्रा
संस्थापक, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का ताजा मई 2008 अंक पढ़ने का अवसर मिला। हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की वाहिका 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका से अनभिज्ञ रहने का मुझे खेद है।

सम्पादकीय सहित अनेक पृष्ठों से शिखर पुरुष डॉ० बच्चन सिंह की भरपूर जानकारी मिली। राष्ट्रभाषा प्रेमी, रीतिकाल के मर्मज्ञ, कुशल समीक्षक डॉ० बच्चन सिंह का निधन, साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र का अस्त होना सा लगता है। स्मृति-शेष, सम्मान-पुरस्कार, संगोष्ठी/लोकार्पण, अत्र-तत्र-सर्वत्र सभी स्तम्भ आकर्षक हैं। पुस्तकों की विशेषता बताने के साथ पुस्तक परिचय भी सराहनीय कार्य है।

— हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'
कटहरा, भागलपुर

मई 2008 के 'वाङ्मय' अंक में डॉ० विजय अग्रवालजी का लेख, 'किताबों में है बड़ी ताकत' पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। इस लेख का एक-एक शब्द सार्थक और प्रेरणादायक है। आप स्व० मोदीजी की इच्छाओं को मूर्त रूप दे रहे हैं, यह आपके सम्पादकीयों को पढ़कर अनुमान लगाना कठिन नहीं है। **— खेमचन्द्र चतुर्वेदी,** अजमेर

प्राप्त पुस्तकें / पत्रिकाएँ

तिरुवल्लुवर दोहावली (तिरुक्कुरल अनुवाद) : डॉ० इंदरराज बैद, 14, नारायण एपार्टमेंट, टेंथ स्ट्रीट, नंगनल्लूर, चेन्नई-600 061, मूल्य : 100/- रुपये

भारतीय मानचित्र के दक्षिणी भूभाग की भाषाओं में सबसे प्राचीन भाषा है तमिल। संत तिरुवल्लुवर की महनीय कृति 'तिरुक्कुरल' लगभग 2000 वर्ष पहले लिखी गयी रचना है, जिसका प्रभाव और प्रसार आज तक बना हुआ है। तमिल भाषा के इस नीतिग्रन्थ का लैटिन, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। डॉ० इंदरराज बैद ने इस कठिन अनुवाद को हिन्दी में सुलभ कराया है, जो पठनीय एवं सहज ग्राह्य है।

जीने के लिये (कविता-संग्रह) : रमेशकुमार त्रिपाठी, प्रकाशक : आलोक प्रकाशन, 99 ए/150, लूकरगंज, इलाहाबाद-1 मूल्य : 160/- रु०

प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ किसी राजनीतिक-वैचारिक पक्षधरता के बजाय सीधे जीवन के लिये प्रतिबद्ध हैं। इसीलिये इन कविताओं में घर, परिवार, घर की दीवारें, बर्तन-बासन, पेड़-पौधे, फूल-तितलियाँ, पारिवारिक सम्बन्ध आदि सबकुछ हैं और इन्हीं आयामों के बीच रची गयी हैं ये कविताएँ। जीवन के त्रास, कुंठाओं, यंत्रणाओं से अलग इस संग्रह का स्वर है— 'खिलने दो/कलियों को, हँसने दो/फूलों को, हमको खुश/रहने दो, जग सुंदर/दिखने दो।'

वाक्य-संरचना और विश्लेषण : नए प्रतिमान : प्रो० बदरीनाथ कपूर, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, मूल्य : 300/- रुपये

आज विश्व की अनेक प्रतिष्ठित भाषाओं में हिन्दी का नाम समादर के साथ लिया जाता है। हिन्दी का साहित्य स्वयं में भारतीय संस्कृति का एक कोश बन गया है। पर जब हमारा ध्यान हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक अर्थात् व्याकरणिक पक्ष पर जाता है तो मन शोक से भर उठता है। इतने समृद्ध साहित्य की संवाहिका हिन्दी भाषा का न तो सर्वमान्य व्याकरण बन सका और न सर्वस्वीकृत रूप ही विकसित हो सका। प्रो० बदरीनाथ कपूर की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'वाक्य-संरचना और विश्लेषण : नए प्रतिमान' इस कमी को दूर करती है।

बदरीनाथ कपूर की मान्यता है कि वाक्य रचना के नए प्रतिमान क्रियापदों पर ही अवलंबित हैं। क्रियापदों को आठ वर्गों में विभक्त कर प्रत्येक में पाँच-पाँच नियामक सूत्र ही इस पुस्तक के नए प्रतिमान बन गए हैं। इस प्रकार चालीस सूत्रों को आधार बनाकर हिन्दी में प्रयुक्त समस्त प्रकार के वाक्यों का गठन अथवा संरचना और विश्लेषण ही इस पुस्तक का प्रतिपाद्य है। भाषाविद् प्रो० कपूर ने सरल सुबोध शब्दों में प्रतिपादित किया है कि क्रियापद के स्वरूप से वाक्य में प्रयुक्त पदों और पदबन्धों के मुख्य घटकों का परिचय प्राप्त हो जाता है। वाक्य का कर्त्ता होगा कि नहीं, होगा तो उसमें विभक्ति होगी या नहीं, यदि विभक्ति हुई भी तो कौन-सी। कर्त्ता की क्रियापद से अन्विति होगी या नहीं, यदि कर्म हुआ भी तो विभक्ति से संपृक्त होगा या असंपृक्त। उसकी क्रियापद से अन्विति होगी या नहीं। इन समस्त प्रश्नों और अनसुलझी गुत्थियों को लेखक ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित किया गया है। चार्टों और चित्रों के माध्यम से दुरूह विषयों को सुबोध बनाने की कला इस पुस्तक की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

वार्तावाहक (मासिक, मार्च 2008) : सम्पादक-ब्रजसुंदर पाढ़ी, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, शंकरपुर, असबोदय मार्केट, कटक-753012, मूल्य : रु० 10.00

सन्तों एवं सूफी कवियों की सांस्कृतिक चेतना : डॉ० अरुण कुमार पाण्डेय, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4378/4बी, 105, जे०एम०डी० हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, मूल्य : 395/- रुपये

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **जुलाई 2008** **अंक : 7**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)